Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा
सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 15 vad 02 29 Qjojh 2016 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

आतंक के घुमरते काले साए

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

विस्मय करने वाली हाल की दो घटनाएं – जे एन यू तथा जाधवपुर विश्वविद्यालयों में अचानक अफज़ल गुरू के चेले कहां से पैदा हो गए ? दोनों ही स्थानों पर विपक्ष की भूमिका भी एक प्रश्नचिन्ह चिन्हित कर रही है। छात्र नेता कन्हैया कुमार के उद्घोष कि इस सभा में कशमीर से कम से कम 10 लोग आए थे, के बावजूद वामदल और कांग्रेस दूसरे विपक्ष को जोड़कर बजट सत्र भी इसके भेंट चढ़ाने पर आमदा है। क्या लोकसभा राज्यसभा जैसे पावन स्थल इस तुष्य राजनीति के अड्डे हैं या अपनी बात–विकास की योजनाओं हेतू विचार रखने का मंच ?

फ़रवरी मार्च के दूसरे सप्ताह में हरियाणा व पड़ोसी राज्यों में आरक्षण के विरोध व प्रतिरोध में लगातार बढ़ रही घटनाओं से भी देश की आंतरिक सुरक्षा पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। राजनैतिक व नीजि स्वार्थों के कारण शरारती तत्वों द्वारा उपद्रव फैलाने के कारण लगभग 12–15 मासूम नौजवान अकाल मृत्यु के ग्रास बन गए हैं और जन साधारण की प्रतिदिन बढ़ती हुई कठिनाईयों के इलावा करोड़ों की संपति की क्षति हो चुकी है जिस कारण सदियों पुरानी सामाजिक पारस्परिक भाईचारे की धरोहर भी तुच्छ राजनैतिक स्वार्थों के कारण समाप्त होने के कगार पर है। अत: आजादी के परवाने और शहीदों की चिताओं पर फूल चढ़ाते वक्त की पंक्तियां लेखक को याद आती हैं – ''हम लाए हैं, तुफान से किश्ती निकाल के, इस देश को रखना मेरे बच्चो संभाल के।'' इसलिए संपूर्ण राष्ट्र की सभी राजनैतिक पार्टियों को पार्टी लाईन से उपर उठकर देश के विकास की पटरी को आगे बढ़ाने की तुरंत आवश्यकता है।

यह तथ्य है कि आतंकवाद एक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा है जिसके कई कारण हैं जैसे बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, जाति, मजहब की संक्रीणता और तुष्य राजनीति लेकिन सर्वोपरि आज भी एक ही समाज क्योंकि इतना असुरक्षित महसुस कर रहा है या वसुंदैव कुटंभकम की धारणा को नष्ट करने पर आमदा है। उदाहरणार्थ संपूर्ण मुस्लिम देश ही नहीं अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, सोमालिया, अफ्रिका, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, पाकिस्तान, चीन और भारत सभी इसकी गर्मी महशुस कर रहे हैं। इसके क्षेत्रीय नाम अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन मानवता के विरोधी तालीबान, आई एस आई जैसे अनेकों संगठन हैं जो सभी एक ही समुदाय हैं। ऐसा भी नहीं कि संपूर्ण मुस्लिम समाज उनका समर्थक हो या ऐसी गतिविधियों में संलिप्त हों। आजादी के परवाने भारत के तीन राष्ट्रपति, सर अब्दुस कलाम के लिए शीश स्वत: झुक जाता है तथा सेना के आज भी बहुत से जाबांज इसी समुदाय से हैं। उदाहणार्थ सियाचिन में हुए शहीद सैनिकों में भी इस समुदाय से हैं और सेना की पत्रिका 'आक्रोश' के मुख्य संपादक मेजर जनरल अफसीर करीम जैसी अनेकों शख्शियतें हैं, इन्होने दक्षिण ऐशिया में आतंकवाद और फंडामैंटलिज्म के दोहरे खतरे पर काफी कुछ लिखा, वर्णित किया है। तुष्य राजनीतिकार अपनी–अपनी स्वार्थसिद्धि हेतू बढ़–चढ़कर भाग ले रहे हैं। इसमें भी कोई शंका नहीं कि भारत चारों ओर से शत्रुओं से घिरा है। चीन सीधा ना होकर नेपाल और पाकिस्तान के रास्ते, पाकिस्तान छदम युद्ध हेतू आतंकवादियों को प्रशिक्षण हथियार और माली सहायता प्रदान कर रहा है। किस्सा कोदा यही है कि संपूर्ण विश्व एक लावा के उपर आसीन है। यह विस्फोट किस–किस को और कब तक मानवता को झुलसाता रहेगा, कोई नहीं जानता ? कम से कम हम भारतीय तो अपने राष्ट्र की सुध लें, ऐसा ना हो कि 'औरों की सुध लीजिए अपनी दे विसार'' भारत में नक्सलवाद की जड़ बंगाल के एक छोटे से गांव से शुरू हुई थी, आज करीब पूर्ण राष्ट्र इस आंच से झुलस रहा है।

आज देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था बुरी तरह से चरमरा गई है और बाहरी सुरक्षा पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। इस अवस्था के लिए मुख्य रूप से राष्ट्र में अंदरूनी बढ़ती हुई सांप्रदायिक व जातीय हिंसा, जेहादी उग्रवाद, उत्तर पूर्वी राज्यों में बढ़ती हुई अलगाववाद की भावना, माओवाद, राष्ट्रीय भावना का अभाव, न्यायिक अव्यवस्था, बढ़ती हुई बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता, नेताओं की दलगत वोट की राजनीति व लाल सलाम उत्तरदायी है। देश की बाहरी सीमाओं में पड़ौसी राज्यों –पाकिस्तान, बंगलादेश, चीन, नेपाल, श्रीलंका आदि से हो रही लगातार अनगिनत असामाजिक व जेहादी तत्वों की अवैध घुसपैठ, बेहतर संबंधों के नाम पर चीन द्वारा किया जा रहा भीतरघात, भारतीय समुद्री मार्ग तट व इसके आस पास के इलाकों से हो रही अवैध घुसपैठ व तस्करी से भी राष्ट्र की बाहरी सुरक्षा के साथ–साथ अर्थव्यवस्था की स्थिति प्रभावित हो रही है।

'k"k i`t&2 ij

’k"k i!t&1

बंगाल के एक गांव से शुरू हुआ नक्सलवाद का तांडव आज राष्ट्र के कई राज्यों - आंध्रप्रदेश, ओडिसा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, तामिलनाडू, उत्तरप्रदेश व कई केंद्र प्रशासित प्रदेश में भी आतंकवाद/माओवाद/नक्सलवाद अपने पांव जमा चुका है। इसमें कभी कोई दो राय नहीं है कि किसी समस्या का निदान कभी बंदूक की नाल से नहीं निकलता। निदान के लिए जरूरी है कि समस्या की जड़ तक जाया जाए, भटके नवयुवा को राहे रास्ते लाने के लिए उसे रोजगार के अवसर, न्याय, विकास की सीढ़ी उपलब्ध करवाकर मानवता का रास्ता दिखाया जाए लेकिन हमारे राजनैतिक दल स्वार्थवश ऐसा नहीं होने देते। स्वच्छंद नव युवाओं, जिनका विवेक पहले ही मर चुका है, उन्हे जाति पाति, धर्म, क्षेत्रीयता के नाम पर गुमराह कर उन्हे अपने मतलब के लिए बहकाया,फुसलाया जाता है।

छत्तीसगढ़ की घटना जिसमें प्रदेश के दरभा क्षेत्र में शीर्ष कांग्रेस नेताओं की जघन्य हत्या एक ज्वलंत उदाहरण है जिसका बारीकी से अध्ययन किया जाए तो बात स्वतः स्पष्ट होती दिखती है। आज कांग्रेस कितना भी दूसरों के मथे लांछन लगाए लेकिन इस संस्था को आत्म रक्षा के नाम पर हथियार और प्रशिक्षण कांग्रेस की ही देन है। यह हमला इस तथ्य को रेखांकित करता है कि राष्ट्रीय आतंक विरोधी केंद्र बेहद जरूरी है जिसके लिए केंद्र और राज्य सरकारों में बेहतर तालमेल भी उतना ही अनिवार्य है।

राष्ट्र में हो रही जातीय/सांप्रदायिक हिंसा व दंगों से भी आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था प्रभावित हो रही है। जातीय मतभेद व राष्ट्रीयता की भावना के अभाव में जम्मु काश्मीर, महाराष्ट्र, गुजरात जैसे क्षेत्रों में अल्पसख्यंक वर्ग में सिया-सुन्नी के जातीय झगड़े होते रहते हैं जिसको पाकिस्तानी कट्टर संगठनों व वोट की दलगत राजनीति का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। राजनैतिक हस्तक्षेप भी सुरक्षा बलों को अक्षम बना रहा है जिस कारण शासक दलों के राजनीतिज्ञों द्वारा अपने नीहित स्वार्थों के लिए सेना तथा सुरक्षा बलों पर विपरीत आरोप लगाए जा रहे हैं। अकेले जम्मु कश्मीर में सुरक्षा बलों के खिलाफ दर्ज शिकायतें गलत साबित हुई या शिकायतें झूठी पाई गई। नेताओें द्वारा अपने स्वार्थ के लिए इस प्रकार की सुरक्षा बलों की कार्यवाही पर की जाने वाली उटपटांग बयानबाजी, बेवजह फैलाए जा रहे जातिवाद व धार्मिक कट्टरवादी टिप्पणियां भी राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न कर रही हैं। विभिन्न राजनैतिक दल नक्सलवादियों के साथ खुला व भूमिगत समझौता करते हैं और समय आने पर अशिक्षित व बेरोजगार आदिवासी युवकों को बहकाकर आतंकी गतिविधियों में धकेल देते हैं।

राष्ट्र में निरंतर बढ़ रही लिंगानुपात में गिरावट तथा बेरोजगारी युवा वर्ग में भविष्य के प्रति असुरक्षा व निराशा की भावना उत्पन्न कर रही है जिस कारण राष्ट्र की युवा शक्ति विकास की अपेक्षा अवन्नति की ओर अग्रसर है जिसका राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ राष्ट्र के विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। राष्ट्र के ग्रामीण समाज विशेषकर नक्सलवाद से प्रभावित बिहार, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में बढ़ती हुई बेरोजगारी के साथ-साथ आर्थिक विकास का अभाव व भुखमरी भी माओवाद का मुख्य कारण है। आज भी इन क्षेत्रों में अनपढ़ व बेरोजगार हैं और इनकी दयनीय आर्थिक स्थिति व अशिक्षा का लाभ उठाकर माओवादी अपने गिरोह बढ़ा रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार आज अधिकतर राज्यों में माओवादी संगठनों ने स्थाई सदस्य बना रखे हैं और इन्होने बाकायदा अपने क्षेत्र घोषित किए हुए हैं जहां माओवादी खुद फैसला सुनाने, कर इकट्‌ठा करने व सुरक्षा प्रदान करने का कार्य करते हैं। अब बेरोजगार युवकों के इलावा महिलाएं भी आंतकवादी सगंठनों में संलिप्त हो रही हैं। बिहार रेल लूट इसका ताजा उदाहरण है। आंतरिक सुरक्षा के अन्य पहलू दयनीय हो रही आर्थिक अव्यवस्था व आर्थिक असमानता में भी सुधार किया जाना बहुत जरूरी है। अतः चारों ओर देश प्रदेश के बिगड़ते हुए हालात व बदतर हो रही अव्यवस्था को देखते हुए मैं एक कवि की निम्न पंक्तियां कहने पर मजबूर हूं :-

''मैं दीपक की रोशनी से बचाता रहा घर अपना,
लेकिन चंदेक कुर्सी के कीड़े पूरा मुल्क खा गए।''

राष्ट्र को न्याय उपलब्ध करवाने वाली न्यायिक व्यवस्था भी भ्रष्टाचार व राजनैतिक दबाव के कारण प्रभावित हो रही है जिस कारण अपराधियों व घोर आंतकियों के मामलों का लंबे समय तक निपटारा ना होने से अपराधियों के हौंसले बढ़ जाते हैं और न्याय व्यवस्था से जनता का विश्वास कम होता है। शासक दलों में भी रसुकदार व्यक्ति व नेता अपने प्रभाव से अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही को प्रभावित करते हैं। जनता को न्याय व सुरक्षा दिलाने में हमारी न्याय प्रणाली जटिल व धीमी है जिसका प्रभावशाली व्यक्ति अपनी सुविधा अनुसार फायदा उठाते हैं। वर्ष 1984 से 2016 तक 65 बड़े आतंकी हमले हुए जिनमें सुरक्षा बलों के इलावा 1920 नागरिक हताहत हुए लेकिन केवल 6 फैसले सुनाए गए हैं। इसी कारण वे लाभ उठा रहे हैं। सेना और अर्धसैनिक बलों की अनदेखी राजनैतिक हस्ताक्षेप से युवा भर्ती नहीं हो रहे हैं। आज सेना में 14000 से अधिक सैनिक अधिकारियों की कमी है। पठानकोट हमले में मौजूद सेना की अनदेखी कर एन एस जी जैसे संस्था की

तैनाती एक ज्वलंत उदाहरण है। इसमें पुलिस की भूमिका भौहें खड़ी कर रही है लेकिन राजनैतिक आका अपनी स्वार्थसिद्धि में मशरूफ हैं।

राष्ट्र के खुफिया तंत्रों के अनुसार नक्सलियों के लश्करे-तोएबा तथा अन्य इस्लामी आतंकवादी संगठनों से संबंध बढ़ते जा रहे हैं और चीन का पूर्ण संरक्षण प्राप्त है तथा पशुपति से तिरूपति तक रैड-कारीडोर स्थापित करने की चीन की मंशा है। पाकिस्तान की आई एस आई इन्हे पूरा सहयोग दे रही है। यही नहीं नक्सलवादी हर हमले के बाद मजबूत और घातक बनते जा रहे हैं । गत वर्षों में सुरक्षा बलों सहित निर्दोष व्यक्ति इस नक्सली हिंसा का शिकार हो चुके हैं। नक्सवादियों से पिछले चार वर्षो में आधुनिक हथियार और आर0डी0एक्स0 सहित हथियार बरामद किए गए हैं। अकेले जम्मु कश्मीर में विभिन्न बंब विस्फोटों तथा आतंकी हमलों में अनेकों नागरिक व सुरक्षा कर्मी मारे गए गंभीर रूप से जख्मी हुए। इससे पता चलता है कि हमारा खुफिया तंत्र नाकाम हो चुका है और केंद्र स राज्यों के बीच तालमेल की कमी है। इस समस्या के प्रति हमारे शासक वर्ग में भी मतभेद है। सरकार की कभी कर्म व कभी नर्म नीति के कारण केंद्र और राज्यों में सुरक्षा बलों का मनोबल गिर रहा है।

नक्सलियों की आंतकी कार्यवाही के दौरान गत पांच वर्षों से स्कूल ध्वस्त किए हैं। गृह मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार नकस्ल हिंसा में सबसे अधिक स्कूल छत्तीसगढ़ में ध्वस्त हुए, झारखंड में तथा बिहार में भी स्कूल नकस्ल हिसां के शिकार हुए। माओवादियों द्वारा सुरक्षा बलों के जवानों सहित आम जनों की हत्या की गई। इसी प्रकार माऊवादियों ने खुनी संघर्ष सशस्त्र बलों के जवान खेत हुए। ऐसी ताकतों का सिर कुचलने वाले सेना और पुलिस के जवानों और अधिकारियों पर राजनैतिक छींटाकशी के इलावा मानवाधिकार जैसी संस्थाएं भी सक्रिय हो जाती हैं लेकिन कानून की धज्जीयां उड़ाने वाले उसी कानून का सहारा लेकर या मानवाधिकार की दुहाई देकर अपना बचाव करते रहे हैं।

आज राष्ट्र की बाहरी सीमाओं को सबसे अधिक खतरा चीन की तरफ से लगातार हो रही सीमा संबंधी हरकतों व अवैध घुसपैठ से है। समय-समय पर चीन द्वारा बाहरी सीमाओं का उल्लंघन करके लेह, अरूणाचलप्रदेश तक अवैध कब्जा कर लिया गया है और चीन द्वारा पाकिस्तान को सीमा पार से भारतीय सेनाओं पर फायरिंग करने तथा देश के आंतरिक हिस्सों में विध्वंसक कार्यवाही करने के लिए आधुनिक परमाणु हथियारों की पूर्ति करवाई जाती है। आजाद कश्मीर में भी चीन की गतिविधियां लगातार बढ़ रही हैं और चीन अब भारत के अटूट हिस्से अरूणाचल प्रदेश पर भी स्थाई हक जताने लगा है। पाकिस्तान और बंगला देश से भी भारतीय सीमा में अवैध घुसपैठ जारी है । जनगणना के एक अनुमान के अनुसार केवल बंगलादेश से ही कई लाख व्यक्ति गैर कानूनी ढ़ंग से देश में प्रवेश कर चुके हैं जिसमें से अधिकतर देश के महानगरों में पूर्णतया स्थाई तौर से निर्वाह कर रहे हैं और काफी लोगों का राशन कार्ड व वोटर कार्ड आदि की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। इस प्रकार के गैर कानूनी आगतुंकों की ज्यादा संख्या अंतर्राष्टीय सीमा से लगते आसाम, अरूणाचलप्रदेश, त्रिपुरा, पश्चिमी बंगाल, मिजोरम, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि राज्यों में अधिक है।

भारत की कमजोर विदेश नीति का चीन और पाकिस्तान को फायदा हो रहा है। पाकिस्तानी आई एस आई संस्था राष्ट्र की आंतरिक व्यवस्था को नुकसान पहुंचाने के लिए तस्करी, नकली करंसी व ड्रग्स आदि भी पहुंचा रही है जिससे पाकिस्तान को लगभग 500 करोड़ की वार्षिक आमदनी होती है। खुफिया तंत्र तो यहां तक भी बता रहा है कि जंगलों को उजाड़कर स्थापित बड़े-बड़े उद्योगों से लैवी के नाम से पैसा नक्सली उगाह रहे हैं और यही धन नक्सलवाद को पोषित करने में सहायक है।

राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा, अखंडता व आन बान को बनाए रखने के लिए संघर्षरत सुरक्षा बलों व सैन्य कर्मियों के कल्याण व विकास हेतू राष्ट्रीय नीति बनाई जानी चाहिए। इसके साथ ही राष्ट्र की सुरक्षा, अखंडता के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों व उनके आश्रितों के सम्मान व कल्याण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानजनक नीति निर्धारित की जानी चाहिए ताकि राष्ट्रीय व सीमा पार की सुरक्षा में लगे हुए सुरक्षा बलों एवं अलगाववादियों व आतंकवादियों से विषम परिस्थितियों में मुकाबला कर रहे सुरक्षा सैनिकों में आत्मविश्वास, स्वच्छंदता, आत्मनिर्भरता व आत्म सम्मान की भावना कायम रखी जा सके क्योंकि शहीदों के सम्मान से ही सुरक्षा बलों का सम्मान बढ़ता है। यह सर्वविदित है कि जिस कौम एवं समाज में बुजर्गों का सम्मान नहीं होता वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता और जिस राष्ट्र में सैनिकों का सम्मान न हो वह राष्ट्र कभी सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिए आज राष्ट्र को अवसरवादी, भ्रष्ट व अव्यवस्थित तंत्र के मायाजाल से बचाने के लिए देश की आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

गांव के झगड़े खाप पंचायतें निपटायें

–सूरजभान दहिया

आज भारत में समाज का हर चौथा पुरुष प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से कोर्ट मामलों से प्रभावित है तथा अगले बीस वर्षों में हर दूसरा भारतीय कोर्ट प्रक्रिया का शिकार हो जायेगा। लगभग 4 करोड़ मामले अब भिन्न–भिन्न स्तरों पर कोर्टों में निलंबित पड़े हैं। वर्तमान न्याय प्रणाली इतनी जटिल है कि कोर्ट कभी भी इन केसों का निपटान नहीं कर सकते और प्रतिवर्ष निलंबित कोर्ट मामलों की संख्या बढ़ती रहेगी। भारत में वर्तमान न्याय प्रणाली अंग्रेजों ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध में लागू की थी। जब यह न्याय व्यवस्था लागू हुई तो लोगों को बड़ी परेशानी हुई तथा उन्होंने अनुभव किया– ''न्याय नहीं हो रहा है, न्याय नहीं बल्कि अंधेर हो गया है।''

ब्रिटिश के एक प्रसिद्ध अधिकारी डेनियल ईब्लसन ने करनाल जिला गैजटीयर– 1892 में लिखा था– ''हमारी न्यायिक प्रक्रिया में दो बड़ी खामियां साफ दिखाई दे रही हैं– एक तो न्याय प्रक्रिया बड़ी महंगी तथा एक तरफी है, दूसरा इस प्रणाली में ग्रामीण के वरिष्ठ सज्जनों जो बड़ी सूझबूझ रखते हैं को नजरअंदाज कर दिया है।'' एक अन्य अफसर चार्ल्ज इलियट ने लिखा था कि ''हमारे आने से पहले भारत में न्याय व्यवस्था अति सरल, सस्ती तथा तुरंत होती थी और इसमें पंचायत की भूमिका अहम होती थी।''

'गाम राम' की आस्था के साथ पंच–चौतरे पर बैठकर गांव के बड़े–बूढ़े हर झगड़े–टंटों का हंसते–हंसते निवारण किया करते थे। हमें अपने गाम राम पर गर्व था कि उसका कोई मामला कभी थाने, कचहरी में नहीं गया। लाठियां उस समय भी निकलती थीं, सिर–फटौल भी होता था, जमीन जायदाद के विवाद भी उठते थे लेकिन वह सब अनायास ही किस ढब शांत हो जाता था– क्या कहने, मजाल है। विवाह शादी–विवाद का निपटान बड़े अदब से हो जाता था। कोई थाने कचहरी जाये, रपट लिखवाए! पंच–चौतरे और चौपाल के 'पूर' पर सभी कुछ तो सुलझा लिया जाता था और विरोधी लटैत ही स्वयं चोट खाये भाई की मरहम–पट्टी करता था। कुछ देर पहले एक दूसरे पर लाठी का प्रहार करने वाले ही आपस में गले मिलते थे, भाव–विभोर होकर रोते थे और वे सांझे आंसू वैर–वैमनस्य को पूरी तरह धो देते थे।

अब वह बात नहीं। खून–खराबे होते हैं, हत्याएं तक होती हैं, सैकड़ों मामले थाना–कचहरी में जाते हैं, गामौली वकीलों, मुंशियों व बाबूओं के सामने गिड़गिड़ाते हैं, लुटते–पिटते रहते हैं। समय–पैसे की बर्बादी के साथ–साथ अपनी मान–पर्यादा दूसरों को गिरवी रखकर अपने आप को मेरा गामौली लज्जित पाता है फिर भी न्याय उसे नहीं मिलता। कुछ सिरफिरे लोग, भोले भाले हमारे गामौली को 'मूछ की लड़ाई' के भंवर में डालकर निचले कोर्ट में नहीं तो सैशन कोर्ट में, सैशन कोर्ट में नहीं तो हाईकोर्ट तक पहुंचा देते हैं–

मिलता उसे वहां भी कुछ नहीं– सिर्फ घर की बर्बादी!

दरअसल समाज में टूटन है, अब तो हर आदमी अपने घर के चूल्हे के पास अपना हुक्का ले आया है। मुक्त हंसी का स्थान फुसफुसाहटों ने ले लिया है। सद्भावना की जगह साजिश आ बैठी है। लोक–विश्वास लोकअविश्वास में बदल गया है। नई ताती ने घर की चौधर हथिया ली है– बड़े बुजुर्ग हाशिये पर चले गये हैं। नई ताती अड़ियल व पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित है और अपनी संस्कृति को उसने तिलांजलि दे दी है। गांव की जगह–जगह पोलियो में बह गोष्ठियां जो रात तक हंसी–मसखरी के साथ गतिमान रहती थी, अब देखने को नही मिलती। कैसे–कैसे मजाक, कैसी–कैसी प्रेम और सद्भावनाओं से भरी बाते उन गोष्ठियो का अंग थी– अब तो नहीं है। हर आदमी घर की चार दीवारी में कैद हो गया है और जो ग्रामीण भाई शहरों में आ गये हैं वे तो किसी से नाता ही रखना ही नहीं चाहते और वे तो खूद ही खूदानुमा हो गये हैं– वे ठीक बाकी सब गलत। उन्होंने तो पारंपरिक मूल्यों, नैतिकता, सामूहिक स्वरूपों, सद्भावनाओं सभी को ताकपर रख दिया है। मानव की मासूमियत व लोकलाज को छल–कपट को आवरण ओढाया जा रहा है। यह वैभव का युग है–झूठ–मक्कारी से बस पैसा ऐंठा जाये– इसी को स्मार्ट सिटी की संज्ञा दी है।

मेरा मानना है कि यह प्रत्येक पुरुष का दायित्व हो जाता है कि वह बदलते समाजिक परिवेश को समझे तथा उसके प्रति सजग होकर वह समाज को गुणात्मक विचारधारा की ओर ले जाने के लिए प्रयत्नशील रहे। सुशाने–रूडलोफ ने अपनी पुस्तक 'मोर्डनिटी आफ ट्रैडिशनः पोलिटिकल डव्लोपमेंट इन इंडिया' में तर्क संगत के साथ विवेचना की है कि भारत में कुछ ऐसी पारंपरिक संस्थाएं थी जो आदिकाल से चली आ रही थी परंतु उनकी उपयोगिता एवं कार्यप्रणाली आधुनिक थी। इस संदर्भ में उत्तरी भारत में प्राचीन 'खाप व्यवस्था' का उल्लेख करना सामायिक होगा। 'खाप पंचायत' उत्तरी भारत की धनाढ्य सामाजिक पूंजी है। एक विख्यात सामाजिक शास्त्री ने इसे 'क्पअपदम थ्नदबजपवदपदह' कहा है तथा आस्कर लूईस ने अपनी पुस्तक, 'विलेज लाईफ इन नार्दरन इंडिया' में खाप पंचायतों के गिरते स्तर की चिंता व्यक्त की है तथा उसने सुझाव दिया है कि खाप पंचायत जैसी उपयोगी संस्था को पुनः सक्रिय एवं प्रभावी बनाकर मानव कल्याण के लिए समर्पित करना आज के संदर्भ में अति आवश्यक है।

आज खाप पंचायतें विवादों के घेरे में हैं– इन्हें तालीबानी कहकर बदनाम किया जा रहा है तथा तुगलकी फरमानों के साथ इन्हें जोड़कर मीडिया निरूत्साहित कर रहा है। हमें समझना होगा कि खापें पवित्र व सुदृढ़ भाईचारे की प्रतीक हैं। एक बार 1925 में रोहतक के डिप्टी कमीश्नर हर कोर्ट बटलर ने चौधरी छोटूराम से सर्वखाप पंचायतों के बारे में पूछा कि ये खापे क्या हैं? कहीं समानांतर

कोर्ट–कचहरी तो नहीं? चौधरी साहिब ने डीसी को लिखित उत्तर दिया– ''सरकारी कचहरियों में झूठ का बोलबाला होता है, गवाह बदल जाते हैं, टूट जाते हैं, तोड़े जाते हैं, और एक निष्पक्ष, ईमानदार व स्वच्छ जज के लिए यह जानना कठिन हो जाता है कि सच क्या है? जबकि खाप पंचायतों में झूठ बोला ही नहीं जाता, वहां सत्य का ही बोल–बाला रहता है तभी तो सामाजिक न्याय तुल्य हो जाता है।''

जन साधारण से फौरी और सस्ते न्याय की गुहार जोड़ पकड़ती जा रही है परंतु सरकार इस मांग को पूरा करने में लाचार दिख पड़ रही है। कारण, हमारी न्याय प्रक्रिया पूरी तरह पुलिस और अदालतों पर टिकी है जो ब्रिटिश शासन की कुव्यवस्था की देन है। पुलिस व अदालतों के सुधारों के लिए अनेक आयोग व कमेटियां बनी परंतु सरकार ने आज तक कोई कार्यवाही नहीं की है। पुलिस व अदालतों को दैव्य शक्तियां मिली हुई हैं और वे मनमानी ढंग से कार्यवाही करती कई बार दिखती हैं। भारत को आजादी मिले कोई 69 बरस बीत गये हैं। जिस देश में निचले स्तर से लेकर उच्चतम स्तर पर मानव मूल्यों की ओर ध्यान देना दकिया–नूसी बनना समझा जाने लगा हो उसमें और होगा क्या? यह ह्रासशील चक्र एक कर्ज है, अभी चलेगा। यहां प्रजातंत्र के नाम पर निरक्षर भेड़ जनता, के चुने हुए निरक्षर शासक कानून बनाकर जन न्याय का ढिंढोरा भले पीटें, यह स्पष्ट है, सारा प्रशासन कुछ सुविधाभोगियों के लिए है। मैं इसे भ्रष्ट तंत्र की संज्ञा दूंगा। वैसे भी प्रजातंत्र वह है जिसका तंत्र प्रजा हो, यानी कोई न हो प्रजा शब्द अर्थहीन है।

एक आम भारतीय सिर्फ कहने के लिए दुनिया में महानतम प्रजातंत्र का स्वाधीन नागरिक है। बिगड़ती हुई तंत्र व्यवस्था ने आदमी के भीतरी मन को तोड़ दिया है। क्या टूटे हुए आदमी की लोकतंत्र में समर्पण भावना हो सकती है? सीधे शब्दों में कहूं, लोकतंत्र मानवता और दायित्व के वे मूल्य पैदा नहीं कर पाया, जिससे मनुष्य को मनुष्य की तरह जीने का अधिकार मिले। अभिजात के तीन अंग– व्यापारी, अफसर और राजनेता तीनों एक स्थायी संतुलन स्थापित करने के प्रयास के बजाय स्वयं आपस में लड़ रहे हैं। प्रत्येक अंग शेष दो अंगों से अधिक ताकतवर बनना चाहता है। इसी का परिणाम है, लगातार होने वाले अंतर–अभिजात और आंतर–अभिजात संघर्ष, जिनमें जनता को सिद्धांतों और कुछ विशेष प्रश्नों से प्रेरित राजनीति के नाम पर उलझा लिया जाता है। यदि अभिजात वर्ग ने कभी जनता की आंखों में धूल झोंकी है, तो भारत का अभिजात इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। फलस्वरूप वे देश के आर्थिक स्रोतों के नाम अधिकाधिक हुंडिया काटते गये– आर्थिक विकास के लिए बहुत कम शेष बचा, इसलिए संकट है।

फिर भी मैं नहीं कहता भारत भूमि ईमानदार लोगों से खाली हो गई है। पर जो हैं वे निष्क्रिय हैं। उन्हें जोखिम उठाकर आगे आना होगा क्योंकि ढलान पर फिसलती गाड़ी को रोकने के लिए पूरे अस्तित्व को खतरे में डालने के अलावा कोई चारा नहीं है। कोई भी वाद हो, कोई भी पार्टी हो, कोई भी राजनीतिक नारा हो, चलाने वाला मनुष्य ही है और यदि मनुष्य ही अपने दायित्व के प्रति जागरूक नहीं है, तो उसके ऊपर लादी खोल के बारे में कुछ कहना व्यर्थ है। भारत माता ग्रामवासिनी थी, ग्रामवासिनी है और ग्रामवासिनी रहेगी, अतएव जनसाधारण को अपमान रहित जीने का अधिकार ग्रामवासी ही दिला पायेगा। हमने यह अधिकार सदियों से ग्राम संस्था– खाप पंचायत के माध्यम से सुरक्षित रखा है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि 1857 के जनसंघर्ष के पश्चात खाप पंचायतों को अंग्रेजों की दमन नीति के कारण काफी क्षति हुई और आज तक खाप पंचायतों अपनी गरिमा को पुनः स्थापित नहीं कर पाई हैं।

डा. ईश्वरी प्रसाद अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री आफ मैडीवियल इंडिया' में लिखते हैं कि खाप पंचायतें कर्ज, पैतृक संपत्ति, विवाह–शादी, करारनामों, राजस्व संबंधी सभी मामले स्वयं ही निपटाती थी। जनसाधारण की इस संस्था में पूर्ण आस्था थी और आज भी है परंतु भारतीय संविधान में इस प्रकार की संस्था को कोई मान्यता नहीं दी गई है। इसी कारण ग्रामीण क्षेत्र आज झगड़ों का प्लेग्राऊड बन गया है। भारतीय न्याय व्यवस्था इस संकट से परिचित तो है परंतु इसके निदान के प्रति इतनी संवेदनशील नहीं दिखाई देती। यद्यपि धीरे–ध ीरे भारत का उच्चतम न्यायालय न्याय प्रक्रिया में नागरिकों की भूमिका को सम्मिलित करने की ओर अग्रसित है पर ये कदम 'मध यस्था' व लोक अदालत जैसी कार्यवाही तक सीमित रह गये हैं। यदि ग्रामीण परिवेश में खाप पंचायतों को अपनी भूमिका सार्थक, सक्रिय व जन कल्याणकारी बनानी है तो इन्हें आज के संदर्भ में नई सोच ज्ञानबल के साथ सकारात्मक पहल करनी होगी। ग्रामीणों को पुलिस व न्यायालयों के शोषण से मुक्ति दिलवाना सिर्फ खाप पंचायतों की सक्रियता से ही संभव है।

कई शताब्दियों पूर्व भारतीय सभ्यता का उद्गम सरस्वती नदी के तटों पर कुरूक्षेत्र के आसपास हुआ और यहीं से अनेक क्रांतियों के लिए संघर्ष हुये। खाप पंचायत के जनक हर्षवर्धन नरेश की राजधानी भी थानेसर अर्थात कुरूक्षेत्र में ही थी। सोनीपत से प्राप्त एक तांबे की सील इंगित करती है कि महारानी यशोमति ने 590 ए.डी. के जेठ महीने के कृष्ण पक्ष की द्वादश को हर्ष पुत्र को जन्म दिया था, तदनासुर 4 जून को महाज हर्षवर्धन जयंती होती है। यदि हममे ग्रामवासिनी भारत माता के प्रति संपूर्ण समपर्ण भावना है तो हमें 4 जून को खाप दिवस मनाने का सिलसिला शुरू करना होगा। इसके अतिरिक्त कुरूक्षेत्र में हमें महाराजा हर्षवर्धन सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत भवन के निर्माण का दृढ़ संकल्प भी लेना होगा। हमें यह भी स्पष्ट रूप से परिभाषित करना होगा कि खाप एक उच्चस्तरीय पवित्र व छत्तीस बिरादरी की सामाजिक संस्था है जो ईश्वरीय प्रेरणा से चलती आ रही है और यह संस्था समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विकास के प्रति निष्ठावान है। यह भाईचारे की सहमति से स्वचालित संस्था है तथा सरकार को इसका सहयोग जनकल्याण हेतु लेना चाहिये।

Where Sh. Narender Modi Has Gone Wrong ?

Ram Niwas Malik

The whole nation was euphoric and optimistic of bright days ahead when Sh. Narender Modi took oath as Prime Minster of India on 26.05.2014. But the performance of his government during the last 20 months has been below par and his popularity graph is on the decline and superlatives in his thundering speeches are no longer reassuring.

Presently, the Indian economy is not showing good signs in spite of three fold crash in crude oil prices. 7% growth is invisible, non-inclusive and uninspiring. Exports are dwindling. Rupee is falling. Manufacturing and service sectors are showing notional growth. Agricultural growth is stagnant. There is no visible impact on poverty. 300million people are still wallowing in tear jerking deprivation.17 paisa hypothesis of Late Shri Rajiv Gandhi is still relevant in respect of MNREGA. GST Bill is still hanging in the thin air. Indian Railways is still struggling below poverty line. Smart city program will flop because allotment of Rs.500 crore per city per year will hardly construct 2kms of metro rail. Ease of doing business has improved only by 10 points and India now occupies 126th place. POSCO (A Korean company, desirous to invest Rs 60000 crores) is sitting idle in Odisha for the last 12 years without getting the promised land. Therefore the foreign investor is still very shy to invest in India. The quality of education in private Engineering and Medical Institutes has touched a new low as these are being run like commercial shops. The target of developing 1.75 lac MW of renewable energy is still a far cry.

But one must admire his herculean effort to market India in World capitals. National Highway Authority (NHAI) and Coal India Limited (CIL) are doing wonderful jobs. Ministry of Environment has also been very quick in clearing the projects But three essential Expressways namely Noida-Balia, Lucknow-Surat and Patna-Paradip have not been taken up so far. Finance ministry also will be able to limit the Fiscal Deficit to 3.86% of GDP. The effort of the Government to give food subsidy in cash to the poor is admirable but unfortunately State Govt. are not responding for capricious reasons.

This pessimistic outlook continues to prevail because following 12 core issues have not been addressed so far.

1) His first grave mistake was to scrap the Planning Commission and replace it with effete NITI Ayog. The Commission had some flaws but did not deserve its nemesis. Now nobody knows what the NITI Ayog is doing and the planning process is lost forever.

2) The Government did not prepare a precise road map of economic development of India with twin objectives of beating China in the economic race and eradicate poverty by 2023. In fact, the achievement of these two holistic objectives should be the top priority of the government. Deng Xiaoping introduced one child policy and called Singapore economists to prepare a sound economic model and now one can see the difference between two economies.

3) The PM made no efforts to captain the team of State Chief Ministers and involve them in development projects. The wonderful "Swach Bharat Abhiyan" failed and became a big joke because he did not sensitise the Chief Ministers to implement this program seriously. India is not United States of India and Chief Ministers cannot be allowed to treat the states as their personal fiefs.

4) The progress in the field of water resources and hydro power development is only notional. The issue of suicides of farmers particularly in Maharashtra and other water starved states is directly related to this issue. China completed the massive 3-Gorges Dam Project in 6 years. Its power generation capacity of 18200 MW is 2.5 times the capacity developed by NHPC in 35 years River Brahmaputra alone can yield 1.0 lac MW of hydropower. The prosperity of hill states depends largely on hydropower capacity. Southern Haryana is thirsty for water because there is no storage across river Yamuna and its run-off during the rains close to the sea without any use.

5) The issue of population control has remained thoroughly untouched. We are still adding one Australia to the national pool every year. Social and economic conditions within the country will be totally paralysed if the problem of population explosion is not tackled immediately.

6) Country size states of UP and Maharashtra cannot be run efficiently by one Chief Minister and these need to be split into 6 states. Setting up 20 new townships to act as sub-capitals in bigger states will provide lot of employment opportunities and improve governance in the states.

7) No effort has been made to develop horticulture and dairy development in seven green N-E states. These states have very large potential to bring fruit and milk revolution in India.

8) The banking system is under great stress with Rs 3.35 lac crore NPAs .Many states like West Bengal, Punjab, and Haryana are under severe debt traps. The debt on the head of West Bengal Govt. Is Rs 2.25 lac crore. Who will pay these mounting debts? The situation has become explosive as three nationalised banks have become red and bad loans of Rs.1.14 lac crore have been written off.

9) Indian Railway is crying to become the engine of growth.60% railway tracks are grossly underutilized. The answer to all these problems lies in allowing the states to run railway service within their respective territories on a gradual basis. IR should run only the inter-state trains. This one step decentralization will revolutionize the Indian Railways.

10) He did not curb the unnecessary controversies and now you are carrying the weight of improprieties committed by his ministers and MPs on his head.

11) Solar revolution in the country is waiting to happen. One order of government for compulsory solar cooking in the messes of Armed Forces, Police Lines, Hostels, Hospitals, Hotels, etc., compulsory use of Solar water heaters on the residential buildings, compulsory provision of roof-top solar power panels in institutes and houses with size 500 sq. yards or more is enough to revolutionize the economy.

12) No special effort has been made to ensure rapid exploration of hydrocarbons within the country. Your Make India program will succeed only if Special Economic Zones are set up near the ports where the foreign investors could easily set up their units.

According to Jaffrey Sachhs, the six keys to open the doors of economic prosperity are massive infrastructure development , promotion of exports , drastic population control , curbing populist schemes , economic reforms and improvement of ease of doing business. But strangely the government is not using these keys effectively.

A wave of infrastructure development has not been developed so far and people at large feel that the country is not moving ahead with desired speed. Accordingly the press is rightly calling 2016as the Make or Break year for your government. Prime Minister of a country is the second God for his people because their destinies are gripped in his hands.

Now NITI Ayog should be asked to formulate a 20 or 30-point national program for economic development on the above lines. Still 40 months are left for the Modi Government to work professionally to achieve a turnaround in the fortunes of the country. The aspirational and transactional youth will not wait for the promised Achhe Din indefinitely. Now,let us see how Sh. Narender Modi plays his cards to sustain the trust of the people reposed in you two years back.The common man hopes for the best.

प्रेम

–नरेंद्र आहुजा

अढाई अक्षर के इस यौगिक अर्थ वाले शब्द के अर्थ का अनर्थ करते हुए इसे संकुचित करके जितना दुरुपयोग वर्तमान काल में किया गया है शायद उतना किसी अन्य शब्द का नहीं हुआ होगा। आज प्रेम को दो विपरीत लिंगों के काम वासना के शारीरिक संबंधों का पर्याय मान लिया गया है। लड़के लड़की का वासनात्मक आकर्षण और काम पिपासा की शारीरिक तुष्टि मात्र प्रेम नहीं हो सकता। प्रेम तो एक बहुत व्यापक अर्थ लिए हुए है जो जीवन के प्रत्येक रिश्ते नाते संबंध क्रिया में होना चाहिए। पिता–पुत्र, मां–बेटे, भाई–बहन, दादा–दादी, पोता–पोती, पति–पत्नी प्रत्येक पारिवारिक रिश्ते, मित्रों का आपसी व्यवहार, कर्मचारी अधिकारी, गुरु–शिष्य सामाजिक व्यवहार के प्रत्येक पहलू में प्रेम का अपना महत्व है इसके अतिरिक्त प्रेम की पराकाष्ठा के दर्शन भक्त के भगवान के प्रति प्रेमभाव से होते हैं। जब भक्त अपना सर्वस्व भूलकर सब कुछ ईश्वर प्रदत्त जान मानकर ईश्वरीय स्तुति प्रार्थना उपासना में स्वयं को निमग्न कर लेता है। वैसे भी वेद भगवान कहते हैं 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' यजु. 40/1 अर्थात यह सारा संसार ईश्वर से आच्छादित है, ढका हुआ है, ईश्वर इसमें ओत–प्रोत है इसलिए हमें चाहिए कि हम द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, जलन, शत्रुता एवं दूसरों को अपमानित करने के भावों को अपने मन से निकाल दें और सभी में ईश्वर के दर्शन करते हुए सभी से प्रेम पूर्वक व्यवहार करके सबकी सेवा आदर मान सम्मान करें। वैसे प्रेम व्यवहार में एक जबरदस्त चुंबकीय आकर्षण है जादू है। इससे हम पूरे विश्व को जीत सकते हैं प्रेम से हर शत्रु को भी अपना मित्र बना सकते हैं। हम जैसा बोते हैं वैसा काटते हैं, जैसा व्यवहार करेंगे वैसा प्रतिक्रिया में पायेंगे। द्वेष के बदले द्वेष, घृणा से घृणा, क्रोध से क्रोध उत्पन्न होता है। उसी प्रकार प्रेम से प्रेम पैदा होता है और प्रेम का रंग शायद शेष सभी से गहरा और पक्का होने के कारण शेष सभी के ऊपर चढ़ जाता है।

वैसे वेद में **मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे**। यजु. 36/18 कहकर हम सभी को परस्पर एक दूसरे को मित्र की दश्ष्टि से देखने का आदेश दिया और मित्रता का भाव रखने के लिए परस्पर प्रेम अनिवार्य शर्त है। मन, वचन, कर्म से सर्वदा सर्वथा किसी भी प्राणी के प्रति वैर की भावना न रखना अहिंसा है। अहिंसा अभावात्मक है और इसीलिए इस अहिंसा की अवस्था से एक सीढ़ी और ऊपर उठकर परस्पर प्रेम करें। इसे समझने का सरल उपाय है कि हम जीवन में जैसे व्यवहार की अपेक्षा दूसरों से अपने लिए करते हैं वैसा व्यवहार स्वयं दूसरों से किया करें। यदि ऐसा कर पायेंगे तो निश्चित रूप से सबसे प्रेम पूर्वक बरतते हुए अपने धर्म का पालन करेंगे। हम प्राणी मात्र से प्रेम करें वेद तो **'पशून पाहि'** कहकर पशुओं की रक्षा और उनसे भी प्रेम का संदेश देता है। प्रेम की भावना का प्रारंभ घर से करें माता–पिता, भाई–बहन, बंधु–बांधव सभी रिश्तों को प्रेम भाव से सिंचित कर मजबूत बनायें फिर इस इकाई को दश्ढ़ करे हुए पड़ौसी समाज देश और राष्ट्र से प्रेम करें और इसकी परिधि को बढ़ाते हुए संसार के प्राणिमात्र से प्रेम करें और इस प्रेम की पराकाष्ठा इस संसार के रचयिता नियामक ईश्वर से संपूर्ण समर्पण भाव से प्रेम करें।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि हम किस प्रकार से प्रेम करें तो अथर्ववेद में उसका समाधान प्रस्तुत करते हुए संदेश दिया **अन्यो अन्यमभि हर्यम वत्सं जातमिवाहन्या**। अ. 30/1 अर्थात एक दूसरे के साथ ऐसा प्रेम करें जैसे गाय अपने नवजात बछड़े के साथ करती है बिल्कुल निष्कपट, निःस्वार्थ भाव से पूर्ण समर्पण के साथ प्रेम करना चाहिए। प्रेम में कभी कहीं कोई स्वार्थ की भावना, शर्त वा पूर्वाग्रह नहीं हो सकता क्योंकि प्रेम कोई व्यापार या विनिमय की वस्तु नहीं है। प्रेम करने के लिए 'मैं' और 'मेरे' की भावना समाप्त करके 'हम' और 'हमारे' की भावना उत्पन्न करें। प्रेम लौकिक और पारलौकिक सफलता प्राप्ति का उत्तम साधन है। यदि संसार में कोई वशीकरण मंत्र है तो वह प्रेम और माधुर्य ही है। प्रेम वह अग्नि है जिसमें पाप और ताप जलकर भस्म हो जाते हैं। प्रेम संबंधों को प्रगाढ़ करने वाला गारा है। इसीलिए कहा गया "अढ़ाई आखर प्रेम के पढ़े सो पंडित होय" अर्थात प्रेम के व्यापक अर्थ को जान मान कर अपने व्यवहार में उतारने वाला व्यक्ति ही सही मायनों में पंडित या विद्वान होता है। संत कबीर ने भी बड़े सुंदर शब्दों में कहा–

जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, सांस लेत बिन प्राण।।

अर्थात जिसके मन में प्रेम की हिलोरे नहीं उठती वह मश्तक के समान है। किसी ने बड़े सुंदर शब्दों में कहा है जीवन सुमन है प्रेम सुगंधि, जीवन साधना है प्रेम सिद्धि, जीवन प्रार्थना है प्रेम वाणी, जीवन मुक्ति का द्वार है प्रेम उसका पहरेदार और जीवन यात्रा है प्रेम उसका पथ। इसीलिए आईये प्रेम के पवित्र सागर में डुबकियां लगाकर अपने मन वचन कर्म को पवित्र करें। अपने जीवन को आनंदमय बनाने के लिए उसमें प्रेम सागर को भर लें। हम वश्क्षों से सीखें जो उसे कुल्हाड़ी से काटने वाले लकड़हारे को भी शीतल छाया प्रदान करता है।

युवाओं के नाम दहेज न लेने का संदेश

–सरिता चौधरी, जोधपुर, राजस्थान

एक संदेश उन तमाम युवाओं के नाम जो मेरे ही हमउम्र के हैं जिनमें से कोई आईएएस, कोई आई.ई.एस, कोई अध्यापक, कोई पीओ, तो कोई डॉक्टर बनता है पढ़–लिखकर!

सुनो! एक बात सुनाती हूं...

जरा गौर से सुनना...

आपने इतनी पढ़ाई की है इस लेवल तक पहुंचे हो तो आज को कल से थोड़ा बेहतर बनाओ फिर से कल को ही क्यों दोहराना ?

क्यों लेता है आज का युवा वर्ग भी दहेज... वो बिल्कुल साफ मना क्यूं नहीं कर देता... आप एक अच्छे काम के लिए महज कुछ शब्द बोलकर अपनों का सामना तक नहीं कर सके... आप गलत के खिलाफ आवाज भी नहीं उठा सकते, आपमें इतनी हिम्मत भी नहीं है कि आप अच्छा व बुरा समझ सकते हैं तो आप उस पोस्ट के काबिल कैसे हो सकते हैं ?

आप एक जिम्मेदार नागरिक तो कभी हो ही नहीं सकते हैं... क्यों ले लेते हो बिना कुछ बोले लाखों रुपये दहेज में ?

हां माना कि बड़ों के सामने संस्कारी बच्चे कैसे बोल सकते हैं तो जब बात पसंद नापसंद की हो तब कैसे बोला जाता है ? तब कहां चली जाती है आपकी हया व शर्म... तब तो नहीं कहते नहं हमें यह हक नहीं है हम तो संस्कारों वाले हैं... एक बार कोशिश करके तो देखिए कहिए उनसे कि हम शादी लड़की से करते हैं हमें जिंदगी में एक अच्छे हमसफर की जरूरत होती है ना कि ऐशो आराम की... जो बड़े आपके लिए अपनी ख्वाहिशों को भुला तक देते हैं वो जरूर आपकी अच्छी पहल को भी तवज्जो देंगे ही... वरना मेरा तो एक ही सवाल है क्यूं ले लेते हो दहेज ?

कमाकर दिये थे क्या आपने... या करते हो एक पिता से उसकी बेटी का सौदा ?

सबसे बड़ा हथियार बस लोगों को अच्छे के लिए समझाओ तो एक ही वाक्य लोग क्या कहेंगे ?

धत... कौनसे लोग...?? यह आप और हम मिलकर ही तो बनते हैं लोग... जब आप बुरा करते हो तब तो इतना नहीं सोचते हो ?... जब लड़ना हो तब लोग कहीं नजर नहीं आते हैं क्या ?

एक अकेली लड़की अपना सब कुछ छोड़कर आपकी हर चीज को अपनाती है वो अपने बचपन के उस घर को ऐसे भुला देती है जैसे कि वो कभी उसका था ही नहीं... लड़के अपने ससुराल में बेवजह जरा चार दिन भी रहकर बताएं... कितनी शक्तिशाली होती होगी ना वो जो कि दहेज लेने के बाद भी विश्वास करती है और उसी रिश्ते में खो जाती है... आपके घर को अपने घर से भी ज्यादा अपना समझकर संभालती है, वक्त–बेवक्त सबको साथ लेकर चलती है, सबको मोतियों की माला सा साथ पिरोकर चलती है, गलती ना हो पर भी बेवजह किसी के भला–बुरा कहने पर भी सब कुछ चुपके से सह जाती है ताकि कोई उसके जन्म को ना ललकारे... खुद दुखी हो भी जाती है अकेले में पर सबकी खुशियों का ख्याल बखूबी रखती है वो... यह मत सोचना कि हम लोग उन्हें कमाकर खिलाते हैं... नहीं, कभी नहीं वो खुद अपना कमाकर खाती हैं... हिसाब लगा लेना घर का काम किसी भी हाल में नौकरी से कम नहीं होगा... हर चीज वो अपनी मेहनत से पाती हैं तो फिर आप दहेज किसलिए लेते हो? अगर शादी रिश्ता ना होकर व्यापार ही है तो क्यूं नहीं कर लेते सबके सामने ही स्वीकार की हम तो सौदा ही कर रहे हैं लड़की का... जानती हूं बात थोड़ी कड़ी जरूर लगेगी पर सच यही है ? दहेज तो एक खतरनाक बीमारी है... इस दहेज रूपी दानव को मिटाना हमें ही है ताकि कोई भी पिता बेटी को बोझ ना समझे ?

69 की उम्र में पोतों के साथ खेतों में दौड़ना सीखा, 72 में जीते तीन गोल्ड

(जींद) उम्र 72 वर्ष, 4 बेटा–1 बेटी, 11 पोते–पोती हौंसला नौजवानों से भी ज्यादा। जी हां! हम बात कर रहे हैं जींद जिले में सफीदो के गांव बागडू निवासी शांति देवी उर्फ शेहरी की। शांति देवी ने पंचकूला में 21–22 नवंबर को बुजुर्गों के लिए हुई राज्यस्तरीय मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप में तीन गोल्ड जीतकर अच्छे से अच्छे एथलीट को दांतों तले उंगली दबाने के लिए मजबूर कर दिया। उन्होंने दौड़, हाई जंप और तेज चाल में यह मेडल जीते। शांति देवी ने 69 साल की उम्र में अपने पोते–पोतियों के साथ खेतों में दौड़ना शुरू किया और आज गोल्ड जीतकर युवाओं को बड़ा संदेश दिया, कि किसी भी काम की पहल के लिए समय अथवा उम्र की कोई बाधा नहीं होती। रविवार देर शाम गांव में पहुंचने पर उनका जोरदार स्वागत हुआ। पिछले साल रोहतक में हुई इस चैंपियनशिप में भी उन्होंने दो गोल्ड जीते थे।

जब से प्रतियोगिता में भाग लेना शुरू किया तो सेहत का ध्यान रखना भी शुरू किया। रोहतक में प्रतियोगिता जीतने के बाद नियमित अभ्यास करने लगीं। इसके बाद खानपान दुरूस्त रखना भी जरूरी था, सो नियमित एक लीटर दूध और सौ ग्राम घी का सेवन करने लगीं। खूब

मेहनत भी। सर्दियों में बाजरे की रोटी और सरसों के साग के साथ घी खाती हूं। मैं रोज सुबह खेतों पर जाती हूं। वहां पशुओं के लिए चारा की कटाइ करना और पोते–पोतियों के साथ दौड़ लगाती हूं। यह मेहनत हर मौसम में जारी रखने की कोशिश करती हूं।

52 वर्षीय पोते ने भी जीता पदक

शांति देवी को खेल के लिए प्रोत्साहित करने वाले उनके पोते सूरजभान ने भी इस बार इस चैंपियनशिप में 50 से 55 की उम्र वर्ग में भाग लेकर सिल्वर व कांस्य मेडल जीता है।

पति की मौत के बाद संभाला परिवार, मौका मिला तो मैदान भी

72 वर्षीय शांति देवी के पति उमर सिंह की मौत 20 वर्ष पहले हो गई थी। उसके बाद उनकी दूसरी शादी कुंदन सिंह से हुई। कुछ वर्षों बाद उनकी भी मौत हो गई। तब से वह अपने बेटों के साथ खेती की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। तीन साल पहले खेतों में पोते–पोतियों के साथ खेलता देखकर कर खेतों में ही काम करने वाले उनके 52 वर्षीय पोते (जेठ के लड़के का लड़का) सूरजभान ने उन्हें इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। कुछ ना नुकुर के बाद वह राजी हो गईं। फिर सूरजभान ने उन्हें प्रशिक्षण दिया और पूरी तैयारी के बाद 2014 में उन्हें रोहतक में हुई प्रतियोगिता में उतार दिया। यहां दो गोल्ड जीतने के बाद तो शांति देवी का जज्बा सातवें आसमान पर पहुंच गया।

शराब की लत मौत का बुलावा

राजा हिरणयकशिपु के बारे में कौन नहीं जातना जिसने कठिन तपस्या करके भगवान से चार वरदान प्राप्त कर लिए थे। जो इस प्रकार से थे– 1. ना दिन में मरू 2. ना रात में मरूं 3. ना भीतर मरूं और ना बाहर मरूं (वरदान प्राप्त राजा मौत से निर्भय होकर अभिमानवश अपनी मनमानी करने लगा था। उसी मनमानी के चलते वरदान प्राप्त होते हुए भी मौत से नहीं बच पाया था।

आज उसी प्रकार शराब भी अपने मनचाहे वरदान बिना भगवान और बिना घर–समाज प्राप्त अपने आप पाकर अपनी मनमानी कर रहे हैं। इनके भी चार वरदान हैं जैसे खुशी, सर्दी, गर्मी और गर्मी। ये चारों वरदान समय–समय पर सबकी जिंदगी में आते ही रहते हैं। इनमें से पहले दो वरदानों को तो वे वर्जित ही नहीं मानते क्योंकि बहुत से लोग भी इन अवसरों का बहाना पकड़ लेते हैं। बाकी रहे दो वरदानों पर ही गर्मा, गर्मी लोग अधिक टोका–टाकी करते हैं। गर्मी के अवसर पर उदासी प्रकट करते हुए बोले भी दर्द भरया बोले हुए कहते हैं कि क्या करें यार असहनीय गम को भुलाने के लिए पीनी पड़ी। यदि गर्मी में नसीहत के तौर पर समझते हुए कहा जाए कि आज तो बहुत तेज गर्मी पड़ती है आज नहीं पीनी चाहिए तो इनका उत्तर होता है कि गर्मी को गर्मी ही मारती है। इस प्रकार हितकारी की भी उपेक्षा करते हुए मनमानी लगातार दिन रात पीते रहते हैं।

देखो हिरण्यकशिपु के वरदान तो मौत से दूर ले जाने वाले थे, लेकिन इनके वरदान तो मौत के नजदीक ले जाने वाले हैं, फिर भी मौत की परवाह किए बिना पीने का जुगाड़ बनाते रहते हैं। प्रतिदिन जुगाड़ बनाकर पीते रहने से इनका यश, बल और धन सब कुछ नष्ट हो जाता है। सहज–सहज विवश और रोगी होकर समय से पहले ही मौत के मुंह में चले जाते हैं।

नरतन चोला रत्न अनमोला सर्वश्रेष्ठ बतलाया है।
लख चौरासी योनि भुगत के बड़ी मुश्किल थ्याया है।।
बड़ी मुश्किल थ्याया है, फेर भी बिना कद्र गंवाया है।
मा. दयानंद मलिक उसका जन्म सफल जिसने फायदा उठाया है।।

इस नर तन चोले में ही दुनिया के चार पदार्थों (अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष) की प्राप्ति कर सकता है, क्योंकि यह कार्य योनि है। (दूसरी योनि तो सिर्फ भोग योनि है। इस प्रकार बुरे व्यसनों को छोड़कर शुभकर्म करते हुए सच्चे मालिक को याद रखकर जीवन यापन करना चाहिए।

आज के समय में शराब की लत अधिकतर जाट जाति में बढ़ती देखी जा रही है, जो इसको सब बर्बाद करती जा रही है। यही जाति आदि सृष्टि से कड़ी मेहनत करती हुई दुनिया का पेट भरती आई है। हाल की अवस्था को देखते हुए चक्रवृत्ति राज करने वाली शूरवीर जाट जाति इस अवस्था में कैसे आई है। सोचनीय विषय है।

अभी समय है अभी कुछ ना बिगड़ा है।
देखों सुयोग तुम्हारे पास खड़ा है।।

आज की स्थिति को देखते हुए अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत करना, सब पार्टी व वैरभाव त्यागना और संगठित होना अति आवश्यक है। मेरे विचार से

संगठन बनाने के लिए लेखों, भाषणों, भजनों, आज की स्थिति को और अपने इतिहास को बार–बार दोहराया जाए, जैसे एक कवि का दोहा :–

करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान।।

शराब भी संगठन में रोड़ा अटकाने में काफी काम करती है। इसलिए एक भजन के द्वारा शराब की बुराई से अवगत करा कर समझाया गया है।

हो भाई पीनेकरदे बंद शराब, जिसतै होज्या तेरा भला।
रोज पींण लागग्या दूनां, समझ तेरे आती क्यों ना।
तू ना रहमान किसे की दाब, सारी अपनी रहा चला।
होई भाई पीणी करदे बंदशराब, जिसतै होज्या तेरा भला।।
था कदे तेरे बाप का रूका, आज तनै मार दिया फूका।
सूका, ईब बणया फिर सै नवाब, सब कुछ दिया टहला।।
तनै करी कार जिसी, कोए कोए करैसे इसी।
किसी, अपनी जिंदगी करली खराब, और दिया कुणबा रेत रला।।
शराब तै करज्या दूर किनारा, इसने खो दिया भाई–चारा
सारा, गाम तनै देख जनाब, कहैं आग्या बुरी बला।
जिसकी रहे ना सनंद, उसके सब रास्ते होज्या बंद।
मा. दयानंद मलिक राख सही हिसाब, कुछ नेकी में हाथ घला

बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं जो कविता प्रेमी होते हैं, उनको पढ़ने या सुनने में बड़ा आनंद आता है जिससे वे ध्यान से सुनते हैं। ध्यान से पढ़िया सुनी हुई बात पर परख भी होती है और परख से ही अमल में लाने की संभावना होती है। इस प्रकार शराब की बुराई का प्रचार–प्रसार करके इसका सेवन कुछ कम किया जा सकता है।

जयहिंद जय जाट एकता मा. दयानंद मलिक (गतौली)

शराब के प्रति महापुरुषों के विचार

गिलासों में जो डूबे हैं ना उभरे जिंदगानी में
करोड़ों बह गए इन बोतलों के बंद पानी में

क्या ही गजब की बात किसी कवि के हृदय से निकली है। ऐ इंसान तू मनन करने योग्य बुद्धिमान है और कर्म करने के काबिल परमात्मा ने तुझे मनुष्य का शरीर दिया है। अतः उत्तम कर्म करने का हमारा ध्येय व धर्म बन जाता है। हमारे पीर और पैगंबरों, ऋषियों मुनियों व ज्ञानी ध्यानियों, वैज्ञानिकों आदि ने शराब को बुरा पेय बताया है और ये सभी हमारे हितैषी हैं और सर्वविदित है कि जो हितैषी मित्र की बात नहीं मानता उसे आपत्तियां घेर लेती हैं। धीरे–धीरे वह विनाश के कगार पर पहुंच जाता है। अतः अपने हितैषी सद्विचारों को जीवन में ग्रहण कर प्रमाण के लिए महापुरुषों के विचार संकलन करके लिखे जा रहे हैं। कृपया इन पर गौर करते हुए अपने जीवन से शराब के कलंक को हटाएं :

1. मदिरा पीने वाला पानी हो जाता है– (ऋग्वेद)
2. जो–जो बुद्धि का नाश करने वाला पदार्थ है उनका सेवन कभी न करें– आयुर्वेद
3. मैं मद्यपान को चोरी यहां तक कि वेश्यवृत्ति से भी निंदनीय मानता हूं– महात्मा गांधी
4. शराब से सदा भयभीत रहना चाहिए क्यों यह पाप और अनाचार की जननी है– महात्मां बुद्ध
5. यदि तुम परमपिता के स्थान (गिरजाघर) जाने वाले हो तो कभी मद्यपान मत करना और न अपनी संतान को ऐसा करने देना– ईसा मसीह
6. शराब सब बुराईयों की जड़ है– मोहम्मद हजरत साहिब
7. जो मनुष्य शराब का सेवन करते हैं उनके तीर्थ स्नान, व्रत रखने अर्थात कई प्रकार के नियम आदि के महातम्य सब नर्क में पड़ जाते हैं अर्थात नष्ट हो जाते हैं– गुरु नानक देव
8. शराब महाविनाशकारी है तथा मनुष्य को राक्षस बनाती है। दुष्ट दुर्व्यसनों में फंस जाने से तो मर जाना अच्छा है– ऋषि दयानंद
9. शराब के अधीन होकर मनुष्य अनेक निंदनीय काम करता है। वह इस लोक और परलोक में भी अनंत दुःखों को प्राप्त होता है– भगवान महावीर
10. भारतीय संविधान की धारा 47 भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मादक पेय का उपयोग निषेध करती है– संविधान की धारा 47

संकलन : अत्तर सिंह आर्य क्रांतिकारी अध्यक्ष हरियाणा शराबबंदी समिति।

हमे जिन पर गर्व है

Ranvir Punia s/o sh. Virender Singh Punia, grandson of Sh. Jai Pal Singh Punia, HFS, Divisional Forest Officer (RTd.) of class 4th of "The Skyworld School" Sector 21, Panchkula bagged 4th International Rank and 1st State Rank in Cyber Olympics held by S.O.F (Science Olympiad Foundation). This exam was conducted among 22 Countries in the world.

श्रेष्ठ कर्म से लक्ष्य प्राप्ति

श्रीमती दर्शनादेवी राजन

मानव जीवन सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है, परमात्मा ने केवल मनुष्य को ही सोचने–समझने की शक्ति प्रदान की है। अन्य प्राणियों को नहीं। ऐसा क्यों? क्योंकि मानव का जीवन श्रेष्ठ है, जो मनुष्य इस जीवन में श्रद्धापूर्वक नियम पूर्वक ईश्वरोपासना, सत्य का चिंतन, सत्य मार्ग के नियमों का पालन करना समाज की सेवा, रोगियों की सेवा, स्वराष्ट्र एवं विश्व–कल्याण के लिए स्वजीवन को कुर्बान करना, सत्य मार्ग पर चलना, सत्य अहिंसा का पुजारी बनना, वेदों के मार्ग का अनुसरण करना अपने से बड़ों का आदर करना, मात–पिता और गुरु की आज्ञा का पालन इत्यादि कार्य करता है, वही मनुष्य महान बन सकता है, महान व्यक्ति बनने के लिए मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करना पड़ता है, तभी वह महान बन सकता है।

जब मनुष्य का जीवन श्रेष्ठ है, फिर भी मनुष्य श्रेष्ठ कर्म न कर बुरे कर्म क्यों करते हैं? जबकि ईश्वर ने मनुष्य को सभी प्राणियों से श्रेष्ठ बनाया। अतः उसे तो सदैव श्रेष्ठ कर्म ही करने चाहिए, जिससे उसके जीवन में किसी प्रकार का दाग न लग सके। लेकिन अधिकांश व्यक्ति बुरे कर्मों में ही लिप्त रहना चाहे हैं, क्योंकि उन सबको उसी में आनंद मिलता है। सौ में से पांच लोग ही ऐसे होते होंगे जो श्रेष्ठ कार्य करते होंगे। आज के अधिकांश लोग बुरे कर्मों में लिप्त रहकर दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष करते हैं। जबकि बुरे कर्मों में केवल क्षणिक आनंद है, वास्तविक आनंद तो ईश्वरोपासना एवं आध्यात्मिक चिंतन में है। लेकिन मनुष्य इसे समझ नहीं पा रहा है। इस आनंद को वही व्यक्ति समझ सकता है, जो वास्तव में ज्ञानी ईश्वरोपासक एवं दार्शनिक है।

जब मनुष्य के द्वारा किए गए बुरे कर्म का कुपरिणाम उसके सामने आता है। तब वह रोता है और मन सोचता है कि हे ईश्वर। मुझे इस कष्ट में सदबुद्धि दो, जिससे हम गलत कार्य न कर सके। किसी कार्य को करने के पहले मनुष्य सोच ले कि अच्छा और बुरा क्या है? इतनी समझ मनुष्य में जिस दिन से आ जाएगी, उस दिन से मनुष्य गलत मार्ग पर कभी भी नहीं जा सकता है। जो श्रेष्ठ कार्य करता है, समाज उससे ही कुछ अपेक्षाएं रखता है, जिससे समाज को कुछ लाभ मिल सके। श्रेष्ठ एवं कर्मठ व्यक्तियों के द्वारा ही समाज एवं राष्ट्र का उत्थान संभव है। जो व्यक्ति श्रेष्ठ नहीं है, वह कभी भी समाज एवं राष्ट्र का सभ्य नहीं बना सकता है, जिसका आचरण उत्तम है, जो ईश्वरोपासक है, जो सत्य और असत्य की परख करने के बाद अंत में सही बातों का निर्णय लेता है, वही व्यक्ति श्रेष्ठ है, ऐसे व्यक्ति द्वारा ही समाज एवं राष्ट्र का उत्थान संभव है।

किसी दूसरे व्यक्ति को आर्य बनाने के पहले स्वतः बनना होगा; तभी यह संसार आर्य बन सकता है। श्रेष्ठ बनने के लिए मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करना पड़ता है। वास्तव में जो महान बनना चाहते हैं वे सदैव श्रेष्ठ ही कार्य करते हैं इसलिए मनुष्य अपने हृदय के दुगुर्ण एवं दुर्व्यसन को दूर करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। जब मनुष्य किसी प्रकार का दुष्कर्म करता है, लेकिन दुष्कर्म करने के पहले वह सोचता नहीं है कि मैं क्या करने जा रहा हूं? जबब उसके द्वारा कुकृत्य के दुष्परिणाम उसके सामने आते हैं, तब यह ईश्वर से प्रार्थना करता है कि ईश्वर! मुझे बचा लो, मुझमें ऐसी बुद्धि दो, जिससे हम गलत काम न कर सकें।

जो मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करता है, परमात्मा उसे मदद अवश्य करता है, हां श्रेष्ठ कर्म करने वालों के समक्ष बाधाएं तो अवश्य आती हैं, लेकिन अंत में विजय उसी की होती है, जो कर्मवीर होता है, वह बाधाओं को देखकर कभी घबराता नहीं है, बल्कि उससे मुकाबला करता है, क्योंकि यह जीवन संघर्षमय है, जब तक मनुष्य जिंदा रहता है तब उसके जीवन के साथ संघर्ष जुड़ा रहता है, इसलिए मनुष्य को फल की चिंता न कर केवल कर्म करते रहना चाहये, क्योंकि मानव जीवन कर्म ही सर्व प्रधान है, जो प्रधान है, जो मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।

जंगल की राजकुमारियां

–उर्मिला शिरीष

दादी, राजा–रानी की कहानी सुनाओ न।
राजा–रानी उनकी कहानी मुझे याद नहीं
कल रात तुनम सुनायी थी न वो कहाने
रोज–रोज एक ही कहानी सुनेगी?
तो पंचतंत्र की कहानियां सुना दो! जिसमें शेर, भालू, खरगोश होते हैं
वो मुझे नहीं याद हां मैं बहुत अच्छी कहानी सुनाती हूं दो लड़कियों की कहानी। उन दो लड़कियों की तू मान ले कि वही राजकुमारियां थी उनकी
आपकी वो स्टोरी सेड करने वाली होती दादी, हमें नहीं सुनना
ये सेड–बेड क्या होता है। दादी ने बुलबुल के बालों को सुलझाते हुए कहा– कब से बाल नहीं धोये पसीने की बदबू आ रही है।
बुलबुल अपनी दादी के पास आई ह। उसकी मां अपने देश गयी अै हर साल की तरह। यह फसल कटने का समय था। कुछ अनाल, दालें, चावलमिल जाता था और कुछ नहीं तो गुड़ तो मिल जाता था। जवान होती लड़की को इन दिनों वह पिता के भरोसे अकेला छोड़कर नहीं जाती थी। बुलबुल की चिंता में वह मायके की मस्ती और अपनी नींद खराब नहीं करना चाहती थी क्योंकि यही दो चार दिन होते उसके अपनं। अपनु सुख के। दादी के पास लड़की खुश भी रहती थी और सुरक्षित भी। बुलबल ने इस साल आठवीं की परीक्षा पास की थी। बुलबुल पढ़ने में होशियार थी। बातों मेंचतुर। रहन–सहन में साफ सुथरी चीजों की शौकीन। दो चोटियां बांधेने वाली बुलबुल के बाल बहुत घने और घुंघराले थे। यह अलग बात है कि उसके पास बालों को मुलायम और चमकीला बनाने वाला शैंपू नहीं था।
दादी, पता है, जब मैं मामा के घर गयी थी तो एक बात पता चली थी माता और मामी ने मुझे कसम दिलायी थी कि मैं बाहर यह बात न बताऊं। बुलबुल ने हाठों को गोल–गोल करते हुए कहा। क्या? दादी के सामने के दां टूटकर झर गये हैं, झुर्रियों ेसे भरी गर्दन औरर दुबला–चपटा चेहरा अंदर से झांकती विस्मय भरी आंखें रहस्यमयी बातों को जानने के लिए पते की तरह फैल जाती है। दादी का चेहरा उसी भाव मुद्रा में आ गया।
मामा को पुलिस पकड़कर ले गयी थी और जब उनकी खून पिटाई हुई तो उन्होंने बोरों में छुपी चीजें पुलिस को दे दी थी। दादी समझ गयी कि बुलबुल उस हमले की बात कर रही है जिसमें कई पुलिस वाले बारूदी सुरंगे फटने से मारे गये थे। इतेरा इन बातों में खूब ध्यान लगता है। अब मामा कहां है?

मम्मल ने मुझे तभी तो बुला लिया था मेरा स्कूल छूट गया था। दादी, बंदूक बहुत भारी होतह े। मैंने एक बार मामा से छुपकर उठायी थी। बुलबुल ने हिरनी सी चमकी आंखें घुमाकर कहा मम्मी अंके में रोती है। मामता जंगल में भाग गया था, फिर किसी को नहीं मिला। जंगल में गये लोग वापस नहीं आते, दादी?
चुप चुपकर चल बाल धोकर आ। वे बातें किसी को मत बताना। समझी। दादी जानी है कि उसके ार के मर्द सदियों से यूं ही करते आ रहे हैं उनका ठौर कहीं नहीं ह। दादी, कहानं। बुलबुल दादी के पांव पकड़कर मनुहार करने लगी। याद करती हूं। दादी ने बुलबुल का मन रखने के लिए कहा।

अच्छा दादी, बताओ, क्या मैं पुलिसवाली नहीं बन सकती। बुलबुल फिर उसी दुनिया की तरफ लौटने लगी। वह दुनिया उसे आकर्षि करती थी, ेरांमांचित करती थी, उसका रहस्यलोक उसु चुंबक की तरह खींचता था। क्या करेगी पुलिसवाली बनकर?

गुणें की पिटाई करूंगी जो लोग लड़कियों को परेशान करे हैं, उनके पर्स और चेन लूटते हैं, उनको पकड़ कर मारूंगी। बुलबुल कल्ना मात्र से पुफल्लित हो उठी। उसका रोम–रोम रोमांचित हो रहा था। पता है दादी, मम्मी मेरे लिए लड़का देख रही है?

पापा ने कहा कि बचपन में शादी की तो पुलिसवाले पकड़कर ले जायेंगे। दादी मुझे तो पुलिस बनना है, पेकंट–शर्ट पहनना है। कितनी स्मार्ट लगती है पुलिसवाली। अहा! दादी, मैं भी स्मार्ट लगूंगी। दादी चौकी। उन्होंने गौर से बुलबल को देखा लड़की सयानी हो गयी है शादी ब्याज की बातें सझती है पुलिस और बंदूक के बारे में जानती है अपने लिए सपना चुनना चाहती ह। जीवन का सच टुकड़ों–टुकड़ों में उसके भीतर पड़ा था। बुलबुल के भीतर चिंगारियां थीं

दादी, क्या हम हमेशा ऐसे ही रहेंगे गरीब। दूसरों का दिया हुआ सामान खायेंगे। पहनेंगे। हमें मम्मी की तरह झाड़ू–पोछा करना पड़ेगा। दादी, मुझे बहुत डर लगता हे। मैं पढ़ना चाहती हूं, दादी के पास ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे देकर वह बुलबुल की इच्छाएं पूरी कर पाती। उसने स्वयं जो जीवन जिया था, वह कष्टों और अभावों के अंतहीन कहानी थी। बुलबुल उस जीवन को यूं भी नहीं स्वीकारेगी दादी इतना तो समझ गय थी कि बुलबुल पांवों के नीचे रौंदेन वाली छोकरी नहीं है। अगर उसे इस समय न दबाया तो वह नदी की धार की तरह फैलती जायेगी।

दादी, हमारा जीवन ऐसा क्यों है किसी के पास चार–चार करें और मकान है और हम सबके पास एक महान भी नहीं है। क्यों दादी! बुलबुल आज सारे सवालों का जवाब चाहती ह।। सवालों की व्याकुलता ने उसके धैर्य की हदें तोड़ दी हैं। मैं क्या जानूं तू स्कूल जाती है मुझे पता होना चाहिए।

दादी, काश मेरे पास भी लैपटॉप होता। मैं सब कुछ फटाफट सीख लेती। सारी दुनिया के बारे में जान लेती। बुलबुल की आंखों में सपनों के तारे चमक रहे थे लेकिन दादी चिंतित है। बुलबुल जितना बोलती, दादी उतना ही खामोश होती जाती। बुलबुल जितना खुश होती, दादीउतनी ही दास। इतनी गहरी उदासी उनके भीतर जाती कि उन्हें चारों तरफ कुआंसा नजर आने लगता । इस घर में जब भी किसी लड़की ने सपना देखा वह दुखी होकर जियी,

मरी। क्या सपने भी पीढ़ी दर पीढ़ी आते हैं। उनकी भी वंश परंपरा होती है? दादी के भीतर सिहरन दौड़ गयी।

दादी कल हम घूमने चलेंगे। कहां? यहां कोई हाट–बाजार तो है नहीं। कहां जायेगी घूमने?

जंगल में। मम्मी जाती थी जहां वहीं। मम्मी बताती है कि वहां दिन में भी अंधेरा रहता है, जंगली जानवर आते हैं। बहुत बड़ेक–बड़े पेड़ होते हैं और घेड़ों पर सवार राजकुमार घूमते हैं। जंगल नहीं जा सकते, किसी जानवर ने पकड़ लिया तो
अच्छा सो जा, एकदम सुबह–सुबह चलेंगे। दादी ने सोचा जंगल के आसपास घुमा फिराकर फटाफट वापस ले आयेंगे बुलबुल को।

आज की कहानी रह गयी दादी कल सुनेंगे वही कहानी जंगल की राजकेुमारियों की कहानी, जहां उनको छोड़ दिया थिा बुलबुल है, बुलबुल पक्के मकान में रहना चाहती है, बुलबुल की सुंदर नाजुक उंगलियां लिखना चाहती हैं किताबों के पन्ने पलटना चाहती हैं। बुलबुल कभी ब्रह्माण्ड में घूमती है तो कभी आकाश में तो कभी पाताल में तो कभी नदियों में तो कभी जंगलों में। बुलबुल के सपनों का संसार असीम है रंगीन है विराअै उसकी मम्मी के संसार से ेसाखता अलहदा है। म्मी का चांदी सा चकता रंग सांवला हो गया है काले घुघराले बाल झड़कर जरा से रह गये हैं सुंदर गुलाबी होंठ शुष्क हो गये हैं सब कुछ घिस गया है। सब कुछ जो बुलबुल को पसंद नहीं ह। बुलबुल इन सबसे दूर रहना चाहती ह। आज की रात बुलुबुल की आखिरी रात है। पने देखने की रात। सपनों को चुनने संवारने और साकार करने की रात। चमेली के बिखरे फूलों को समेटनेकी रात। वह बार–बार उठती है, बै।ठती है, फिर लेटती है दादी खर्राटे भर रही है, पर बुलबुल भोर होने की प्रतीक्षा कर रही है ताकि जंगल जा सके।?
दादी, उठो सुबह हो गई।
अभी कहां तीन बजे हैं देख चांद उधर है, जब इधर आ जायेगा तब भोर होगी। दादी, तुम बा रही थीं कि राजकुतारियां जब जंगल में जाती थी और जब उन्हें कोई पंखों वाला राक्षस उठाकर ले जाता था तब कोई राजकुमार आता था और उन्हें क्वेद से बाहर निकाल लेता था। दादी, अगर घूमते–घूमते मैं और तुम जंगल में गुम हो गये तो मुझे बचाने कौन आयेगा। राजकुमारों के पास तो घोड़े होते थे पर आजकल के राजकुमारों के पास तो घोड़े भी नहीं होते। मैंने तो जंगल के आदिमियों केपास बंदूकें देखी हैं, क्या आदमियों का जंगल अलग होता है? तू तो पागल हो गयी है, कहां–कहां की बातें तेरे भेजे में आ जाती हैं, चल सो जा। दादी ने डपटते हुए कहा।

बुलबुल करवट लेकर लेटी तो सचमुच गहरी नींद में चली यी। दादी ने उसे थपथपाकर उठाया। जल्दी से तैयार हो गयी। जब वे दोनों घर के बाहर निकलीं तो कच्चे मकानों की पांत खत्म हो चुकी थी। ऊबड़–खाबड़ पगडंडियों को पार करते हुए जब वे साफ रास्ते पर पहुंची तो सूखे खेत दिखाई दे रहे थे। खेतों में गहरी दरारें पड़ीं थी, इतन गहरी और चौड़ी की बुलबुल का पांव अंदर धंस जाता। दादी, बचकर पांव चला गया तो, उधर मत जा, बड़े–बड़े सांप–बिच्छू रहते हैं। दादी ने उसे डराया।

आगे बड़ी तो कुछ गाय–भैंसे दिखाई दी, जिनके पेट से आंतें झांक रही थीं। ये ऐसी गाय–भैंसे थीं, जो बूढ़ी हो चुकी थी कि जिनके दाना–पानी की व्यवस्था नहीं हो पाती थी जिनकी मृत्यु की खबर आसमान में उड़तेमंडराते चील कोए से मिलती थी। बुलबुल उनको देखकर सकपका गर्ठ। भय की लकीर उसकी देह में गहरे तक खिंच गई थी। भूखी है। चारा–पानी नहीं मिलता। दादी उसे समझाती जा रही थी यह क्या हो रहा है? बुलबुल का सपनों वाला जंगल कहां है कहां है घना, सुंदर, सांवला जंगल,ख पेड़, जानवरी दादी, वे पेड़ कहां हैं, जिनके बारे में मम्मी बताती थी। तेरी अम्मा तो झूठी–साची बातें बताती थी, अब कहां धरे पेड़ लताएं। चलेगी या लौट चलें तेरा शौक पूरा हो गया। दादी ने पेड़ की बेगानी–सी छांव में सुस्ताते हुए कहा। बुलबुल का मन किया, वह जोर–जोर से पुकारे–मामा! मामा! ओ मामा! पर उसके गले से एक शब्द भी न निकला। दादी, वो जंगल जिसमें राजकुमारियां खो जाती थी। वैसा जंगल वो इंधर नहीं है वो तो शहर वाले काटकर ले गये हैं। दादी झुंझलाकर बोली।

बुलबुल हतप्रभ सी चारों तरफ देखे जा रही थी। अगर उसके पास कैमरा होता या कैमरे वाला मोबाइल होता तो सबका फोटो खींचकर टीवी वालों को भेज देती वो बताती कि यहां खेत नहीं हैं, पेड़ नहीं हैं, जंगी नहीं, चिड़ियां नहीं हैं, चीटिंयां और चींटे नहीं हैं, यहां मोर भी नहीं हैं, बंद भी नहीं हैं, वह जितना जानती थी, उतनी चीजों को खेज रही थी। बुलबुल का सपना था कि वह कुछ घंटों के लिए राजकुमारी बन जाये, राजकुमारी बनकर घने अंधेरे जंगल में खो जाये, उस जंगल में जहां हिरण और खरगोश होते हैं शेर और भालू होते हैं तोते और नीलकण्ड होते हैं बंदर आर लंगूर होते हैं जिस जंगल में उसकी मम्मी जाती थी जिसमें मम्मी खो जाती थी और उसके नाना उसे ढूंढकर लाते थे। मम्मी बताती है कि उसने तब हजारों आवाजें सुनी थी हजारों रंग देखे थे हजारों रंग देखे थे हजारों खुशबुएं सूंधी थीं मुझसे अचेिद तो मेरी मम्मी की किस्मत है कि वो कर्ठ बार चार–चार, पांच–पांच घंटे राजकुारी बन जाती थी। दादी, ओ दादी.. चलो... वापस चलते हं। बुलबुल हताश होकर बोली। लौटते हुए बुबुल खामोश थी। गमगीन थी। उसका चेहरा तपकर तांबई रंग का हो गया था उसकी आंखें लाल हो गयी थीं पलकें आपस में चिपक रही थीं पांव लड़ाड़ा रहे थे तेज धूप में वह लस्त–पसत हो गयी थी। घर लौटते समय उसे तेज बुखर हो गया था। वह बुखार में बड़बड़ा रही थी मैं राजकुमारी बनना चाहती हूं मैं जंगल में खाना चाहती हूं। दादी, मैं जंगी की राजकुमारी तो बन सकती हूं। दादी, तुम्हारी सारी कहानिया झूठी हैं। तुम झूठ बोलती हो न कोई जंगल है, न राजकुमार न कोई चिड़िया मम्मी झूठ बूलती थी।

दादी ठंडे पानी की पट्टियां उसके सिर पर रख रही थी उसके आंसू नहीं थम रहे थे दादी को सदमा था कि उसका दर्द बुलगुल के भीतर उतरकर बलबला रहा है। उसने भी कभी राजकुमारी बनने का सपना देखा था और सपनों टूटने पर वह भी इसी तरजह बिलख–बिलखकर रोयी थी जैसे आज बुलबुल रो रही है।

राजा नाहर सिंह

–डॉ. महेंद्र सिंहू

जंग–ए–आजादी, 1857 भारत के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। यह सामान्य घटनाक्रम की एक कड़ी नहीं बल्कि एक निर्णायक मील का पत्थर है। भारत में अंग्रेजी राज अर्थात औपनिवेशिक शासन काल में इस घटना ने साम्राज्य वाद के विस्तार पर विराम लगाया, साथ ही भारत के लिए वे परिस्थितियां पैदा की, जहां से स्वतंत्रता संग्राम का बीज अंकुरित हुआ जो धीरे–धीरे विकसित होकर न केवल एक वृक्ष बना बल्कि उसे 1947 में स्वतंत्रता रूपी उषा भी दी, जिस पर आधुनिक भारत में निर्माण का आधार तैयार हो सका। 1857 से 1947 के नौ दशक केवल घड़ी की सुई के सहारे आगे बढ़ता हुआ समय नहीं था, बल्कि त्याग, बलिदान, संघर्ष व सहादत की एक लंबी गाथा है। जिसको हमारे पूर्वजों ने अपने खून पसीने से तैयार किया तथा अपने–अपने ढंग से अपना सर्वस्व दांव पर लगा कर हमें यह अवसर दिया कि हम खुले आकाश के नीचे अपनी प्रकृति, संसाधनों, खेत–खलियानों, प्रतिभा, अवसर, अरमान व भावनाओं को संजो सके एवं एक सम्मानजनक जीवन से सरोबार हो सके। हमारे पूर्वजों का संघर्ष हमें स्वतंत्रता दे गया एवं अपनी विरासत से भी हमें अवगत करा गया। इसकी महत्ता इस बात में भी है कि उन्होंने विश्व की सबसे शक्तिशाली साम्राज्यवादी ताकत को टक्कर दी, जिसके राज्य से कभी सूर्य अस्त नहीं होता था। भारत में अंग्रेजी सत्ता को प्रारंभ से ही स्वीकार नहीं किया गया था बल्कि अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग लोगों ने अपने–अपने अंदाज से प्रतिरोध किया। ये प्रतिरोध बहुत सीमित स्तर के थे, फलतः साम्राज्यवादी सत्ता उन्हें चुनौती नहीं मानती थी। इसी कड़ी में पहली बार एक विस्तृत, संगठित संतुलित तथा व्यापक चुनौती 1857 में मिली जो शक्ति, अत्याचार, दमन व अमानवीय साधनों को अपना कर असफल कर दी गई। भले ही वे पूर्वज असफल रहे ेकिन उनकी असफलता में भी वैभव छिपा है जो हमें गर्व प्रदान करता है साथ में विरासत, लोक स्मृति तथा ऐतिहासिक प्रक्रिया से सबक लेने का प्रमाणिक आधार भी देता है।

1857 का अध्ययन राष्ट्रीय, राज्य क्षेत्र तथा व्यक्ति विशेष के संदर्भ में करने का प्रयास अवश्य हुआ है, लेकिन यह घटना महत्व के अनुरूप नहीं हो पाया है क्योंकि इस घटना का अध्ययन जितना अधिक गहनता से किया जाए, उसके साथ इसके आयाम भी ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक पक्षों को इस तरह हमारे सामने रखते हैं जिसके कारण इसका क्षितिज फैलता ही जाता है। फिर भी हर अध्ययन को किसी सीमा में बांध कर प्रस्तुत करने की सीमा रहती है। जिसको यहां भी नकारा नहीं जा सकता। इन स्थितियों में भी ध्यान रखने का पहलू यह है कि हमें उन पूर्वजों के बारे में अध्ययन करते समय उनकी चिंतन, भावनाओं व संवेदनाओं का ध्यान अवश्य रखें। जिनको आदर्श मानकर उन्होंने शहादत दी। उनकी शहादत में धर्म, भाषा, जाति, क्षेत्र, लिंग, गांव–शहर व अमीर–गरीब इत्यादि का अंतर नहीं था। इन संर्किणताओं को बाद की पीढ़ी ने अपने स्वार्थ व जरूरतों के अनुरूप विकसित कर लिया है।

1857 के जन–विद्रोह में लगभग पांच लाख लोगों ने शहादत दी जिनमें से कुछ के ही नाम सामने आ पाए, बाकि सभी नींव की ईंट की भांति अतीत के गर्त में गौण हो गए, फलतः इतिहास के पन्नों तक पहुंचना संभव नहीं हो पाया। जो कुछ पहुंचे भी उनके साथ व्यवस्था ने न्याय नहीं किया, बल्कि ऊपरी तौर पर कुछ पक्ष उठाकर मात्र औपचारिकता पूरी हुई प्रतीत होती है। यह बात 1857 के संदर्भ में हरियाणा की भूमिका के बारे में पूरी तरह लागू होती है। यह केवल इतिहासिक घटना के महत्व को कम करना नहीं है बल्कि इसके नायकों के गौरवपूर्ण त्याग, आत्मबलिदान, संघर्ष व आत्मसम्मान को उचित रूप में सम्मान न देना भी है। इन्हीं नायकों में एक नाम राजा नाहर सिंह का भी है जो बल्लभगढ़ के शासक थे। जिन्होंने पूरी सूझ–बूझ व शूरवीरता के साथ स्थितियों का आकलन करते हुए साम्राज्यवाद पर चोट मारी तथा अपनी जनता का समुचित मार्गदर्शन किया। जिसका परिणाम अंततः उनका स्र्वस्व त्याग रहा जिसमें उनके परिवार व इष्ट बंधुओं को अंतिम संस्कार जैसी रसम भी अदा करने का अवसर नहीं मिल पाया। तत्कालीन व्यवस्था ने उनके संदर्भ में लेखन, सामग्री संकलन व स्मरण इत्यादि पर प्रतिबंध लगाया तथा केवल सरकार ने अंग्रेजी पक्ष को प्रस्तुत कर दिया। जिसके कारण नायक की वह पहचान नहीं बन सकी।

बल्लभगढ़ की रियासत दिल्ली के दक्षिण में 21 मील की दूरी पर स्थित थी। 1857 की क्रांति के समय इसका क्षेत्रफल 190 वर्ग मील तथा जनसंख्या 57000 थी। बल्लभगढ़ रियासत के एक ओर यमुना नदी थी, जबकि दक्षिण की ओर मेवात क्षेत्र बाकी सीमा अंग्रेजी राज्य से मिलती थी। दिल्ली से मथुरा होते हुए आगरा का मार्ग (ए–1) इसी क्षेत्र से गुजरता था। ऐतिहासिक दृष्टि से यह क्षेत्र मुगलकाल में बहुत महत्वपूर्ण था। मुगल शासनकाल में इस क्षेत्र को फरीदाबाद की जागीर के नाम से जाना जाता था एवं यह जागीर हमेशा शासक के विश्वासपात्र लोगों के पास रही। औरंगजेब के काल में जाटों के विद्रोह के समय भी यह क्षेत्र सक्रिय था। उत्तर मुगलकाल में यह क्षेत्र विभिन्न जागीरदारों के पास रहा, लेकिन स्थानीय मुखिया की भूमिका अलावतपुर वासी गोपाल सिंह जाट के वंशज निभा रहे थे। गोपाल सिंह के बाद उसका बेटा चरणदास 1714 ई. में तथा उसके बाद 1721 में चरणदास का बेटा बलराम उर्फ बल्लू तेवतिया जाट मुखिया बना। 1725 में उसने सिंही के पास

एक गढ़ी आबाद की जिसे बलरामगढ़ का नाम दिया गया। यह स्थान आगे चलकर बल्लभगढ़ के नाम से विख्यात हुआ।

बल्लभगढ़ के भरतपुर के साथ प्रारंभ से अच्छे संबंध रहे थे, परंतु बाद में इनमें टकराव आ गया था। बलराम के जाट राजा सूरजमल से दोस्ती कराने में महत्वपूर्ण भूमिका एक मराठा वकील की रही। उसके बाद यह जीवन पर्यंत बनी रही। बलराम की धोखे से मृत्यु के बाद यह क्षेत्र अव्यवस्था का केंद्र बना। भरतपुर रियासत के सहयोग से बलराम के पुत्रों किशन सिंह, बिशन सिंह व रामसेवब ने स्थिति को संभाला, लेकिन अहमदशाह अब्दाली के 1755–56 ई. के आक्रमण ने स्थिति को नाजुक बना दिया। 1776 ई. में किशन सिंह का पुत्र अजीत सिंह मुखिया बना। उसने 60,000 रुपए भरतपुर के राजा नवलसिंह को देने के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। इस तरह इस समय यह रियासत स्वतंत्र अस्तित्व में आई। इस रियासत में 210 गांव थे। उसने कानून व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाया। 1793 ई. में अजीत सिंह को उसके भाई जालिम सिंह ने कत्ल कर दिया, परंतु वह फिर भी सत्ता नहीं ले सका। स्थानीय जनता मुगल दरबार के सामंतों तथा भरतपुर के शासक बना। 1803 ई. में अंग्रेजों के दिल्ली पर अधिकार करने के बाद उन्होंने बहादुर सिंह से पाली व पाखल के परगने ले लिए तथा दिल्ली–मथुरा मार्ग की राहदारी वसूलने का अधिकार दे दिया। इसके बाद यह रियासत केवल 28 गांवों की रह गई। बहादुर सिंह की मृत्यु के बाद नारायण सिंह (1806), अनिरूद्ध सिंह (1806–1818), श्योसिंह (1818–20) तथा रायसिंह (1820–29) ने शासन किया। इन शासकों में अधिकतर का शासनकाल छोटा था इसलिए वे शांति व्यवस्था बनाए रखने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सके। 1829 में रायसिंह का 8 वर्षीय पुत्र नाहर सिंह शासक बना। उसकी संरक्षक उसकी माता देवकुंवर रही। उसने अपने दो विश्वासपात्र अधिकारियों अभयराम व पृथ्वी सिंह की सहायता से शासन चलाया। 1842 में नाहर सिंह को बालिग घोषित करते हुए उसकी माता देवकुंवर तथा अंग्रेज रेजिडेंट लॉर्ड ऐलन बरो ने उसे शासन संबंधित निर्णय लेने का अधिकार दे दिया। इसके बाद उसने अपने मामा नवलसिंह को अपना मुख्य सलाहकार बनाया तथा उसने प्रशासनिक नोट पर हिंदु–मुस्लिम जनता के लिए सम्मान रूप से कार्य किए।

नाहर सिंह की शासन नीति से स्थानीय जनता संतुष्ट थी। अंग्रेजों के लिए यह क्षेत्र दिल्ली के अति नजदीक होने पर दिल्ली–आगरा मार्ग पर होने के कारण काफी महत्वपूर्ण था। मार्ग पर स्थित होने के कारण अंग्रेजों का यहां आवागमन सामान्य था, यही कारण है कि इसके अंग्रेजों के साथ लगातार अच्छे संबंध थे। नाहर सिंह के अंग्रेजों से अच्छे संबंधों की पुष्टि इस बात से होती है कि गवर्नर जनरल उसकी बेटी की शादी में शामिल हुआ तथा शादी के बाद उसके व्यवहार से प्रभावित होकर फोर्ट विलियम कलकत्ता से उसके नाम प्रशंसा पत्र भी भेजा। जहां एक ओर इस तरह के संबंध थे, वहीं नाहर सिंह अपने क्षेत्र का विस्तार भी करना चाहता था तथा 1805 से पहले के रियासत में शामिल गांवों को प्राप्त करना चाहता था। दूसरी ओर अंग्रेजों की लगान नीति से भी यह असंतुष्ट था क्योंकि लगान की दर अधिक थी तथा तरीका कठोर था।

11 मई 1857 की घटनाओं के बाद जिस तरह दिल्ली की स्थितियां बदल रही थी, उसके भविष्य को लेकर अंग्रेज, प्रजा व स्थानीय रियासतों के शासक स्पष्ट नहीं थे। दूसरी यह कि जानकारी पुख्ता तौर पर नहीं मिल रही थी दिल्ली की वास्तविक स्थिति क्या है। इसलिए नाहर सिंह ने स्थिति का आंकलन करने के लिए दोनों पक्षों के साथ बराबर संबंध बनाए रखे। उसने सर्वप्रथम दावरबख्श के नेतृत्व में एक सैन्य टुकड़ी बहादुर शाह जफर की सहायता के लिए भेजी। उसने शाही दरबार में अपना स्थायी प्रतिनिधि भेजकर बादशाह को हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया। इसी तरह उसने दिल्ली की नई सत्ता के साथ पत्राचार जारी रखा, जिसके आधार पर समय–समय पर सेना व धन उन्हें भेजा जा सके। दूसरी ओर नाहर सिंह ने दिल्ली से मथुरा–आगरा की ओर अंग्रेजों को भागने के लिए सुरक्षा प्रदान की। आगरा के कमिश्नर हार्वे तथा एक उच्च अंग्रेज अधिकारी डबलु फोर्ड के साथ उसका व्यवहार सम्मानजनक रहा। 24 मई, 1857 तक नाहर सिंह ने लगभग अपने आसपास व अन्य अंग्रेज अधिकारियों को पत्र लिखे।

इसके बाद नाहर सिंह का पक्ष बदल गया। उसने अंग्रेजों के प्रति हर तरह का सहयोग व उदारता का रास्ता बदल दिया। उसने अपनी सेना तथा जनता के अंग्रेजों के विरूद्ध तैयार किया। उसके इस कदम के कारण बल्लभगढ़ के बीच से गुजरने वाला दिल्ली–आगरा मार्ग अवरुद्ध हो गया। उसने मेवों के साथ मिलकर भी कार्यवाही की। मेव नेता सदरूद्दीन उसके लगातार संपर्क में था। जून–अगस्त, 1857 के अंग्रेजी पत्राचार तथा दस्तावेजों पर नजर डालें तो स्पष्ट होता है कि आगरा की ओर से उनका दिल्ली में प्रवेश संभव नहीं था, क्योंकि नाहर सिंह ने यहां मोर्चा लगाकर रास्ता बंद कर दिया था। यमुना नदी में इन दिनों में बाढ़ आई हुई थी, जिसके चलते पुराना पुल टूट चुका था। लकड़ी एक अस्थाई पुल बनाकर रास्ते को खोलने का प्रास किया गया तो उसमें भी सफलता नहीं मिली, क्योंकि यह पुल निर्माणाधीन अवस्था में ही पानी में बह गया। नाहर सिंह ने स्थानीय जाट, मेव, पठान व गुर्जरों की सहायता से पलवल, होडल व फतेहपुर के परगनों पर कब्जा कर लिया। इसके कारण अंग्रेजों ने दिल्ली–आगरा मार्ग असुरक्षित मार्ग घोषित कर दिया तथा अंग्रेजों के दिल्ली मोर्चे की तैयार आगरा से मेरठ व सहारनपुर होते हुए आगे बढ़ाई। बल्लभगढ़ की जनता में भी पूरा उत्साह था जिसके चलते हुए दिल्ली के बादशाह को इस क्षेत्र से रसद, धन व सेना निरंतर मिलती रही।

20 सितंबर, 1857 को दिल्ली पर अधिकार के बाद अंग्रेजों द्वारा क्रांति में शामिल प्रमुख लोगों की सूची बनाई गई। उनमें राजा नाहर सिंह का नाम अति खतरनाक बागियों में था। ब्रिगेडियर जनरल शावर्ज ने 23 सितंबर को बल्लभगढ़ पर आक्रमण किया, राजा नाहर सिंह ने उसका सामना किया, परंतु उसकी पराजय हुई तथा उसे गिरतार कर लिया। तत्पश्चात उसके आवास, अस्तबल व किले सहित अन्य स्थानों की तलाशी ली गई। इस दौरान न केवल बल्लभगढ़ के सैनिकों की वर्दियां मिलीं, बल्कि तीसरी, छठी व 32वीं पैदल सेना बटालियन की वर्दियां भी मिलीं।

विभिन्न तरह के दस्तावेज जो यहां पर प्राप्त हुए उनकी जांच के लिए सी.बी. सांडर्स के नेतृत्व में कमीशन नियुक्त किया गया। एक नवंबर 1857 को एक बार फिर शावर्ज के द्वारा बल्लभगढ़ के किले पर आक्रमण किया गया। राजा नाहर सिंह के सहयोगियों व सैनिकों द्वारा उसका मुकाबला किया गया। उनमें से अधिकतर मारे गए जबकि अन्य को गिरतार कर लिया गया। इसके बाद औपचारिक मुकदमें की कार्यवाही प्रारंभ की गई।

17 दिसंबर को झज्जर के नवाब अब्दुर रहमान खान का मुकदमा पूरा हो चुका था। वही न्यायालय, वही लोग तथा उसी प्रक्रिया के तहत कानूनी कार्यवाही प्रारंभ की गई। इस विशेष न्यायालय का अध्यक्ष भी चैंबरलेन था आरोप पत्र भी सी. बी. सांडर्स ने तैयार किया। सांडर्स ने नाहर सिंह पर मुकदमा भी उसी धारा (विशेष सेना न्यायालय की धारा ग्टप्) के तहत चलाने की सिफारिश की।

23 सितंबर, 1857 से 8 दिसंबर, 1857 तक राजा नाहर सिंह को चांदनी चौक कोतवाली में बंदी बनाया गया जहां पर एक बार फिर सी.बी. सांडर्स ने उससे औपचारिक बातचीत की ताकि आरोप पत्र में विभिन्न अन्य पक्षों को शामिल किया जा सके। 6 दिसंबर को उसे लाल किले के अस्तबल क्षेत्र स्थित अंधेरी कोठरी में डाल दिया गया तथा 19 दिसंबर 1857 को दोनों हाथों व पांवों में हथकड़ी व बेड़ियां डालकर लाल किले के दिवान–ए–आम में पेश किया गया। राजा नाहर सिंह का वकील आर.एम. कोर्टिनी था। उसने इस मुकदमे के प्रारंभ से लेकर अंत तक जवाब दावा तैयार किया तथा सिलसिलेवार गवाहों को भी प्रस्तुत किया। प्रातः 11 बजे सरकारी वकील फ्रेड जे. हरियट ने नाहर सिंह से न्यायालय के बोर्ड व अधिकारियों के बारे में किसी तरह की आपत्ति के बारे में पूछकर आरोप पत्र को पढ़ा जो निम्न था :–

– राजा नाहर सिंह 10 मई से 1 दिसंबर 1857 के बीच सरकार विरोधियों तथा सशस्त्र विद्रोहियों के साथ देशद्रोहपूर्ण पत्राचार किया।

– उसने विद्रोहियों को भड़काया तथा उनकी धन, रसद व हथियार से सहायता की।

– उसने अनाधिकृत रूप से सैनिक भेजकर पलवल के परगने पर अधिकार किया जो अंग्रेजी नियंत्रण में था।

– उसने अंग्रेजों व बल्लभगढ़ के शासक के बीच हुई 1805 की संधि का उल्लंघन किया तथा अंग्रेजों की स्वामी भक्ति छोड़कर उनसे युद्ध लड़ने का संगीन जुर्म किया है।

मुकदमें की कार्यवाही के प्रारंभ में गुड़गांव में मजिस्ट्रेट व कलैक्टर विलियम फोर्ड ने गवाही दी जिसमें पलवल पर अधिकार करने, अंग्रेजों की सहायता न करने, विद्रोहियों को प्रेरणा देने तथा अन्य बटालियन तीसरी, छठी व 32वीं के विद्रोही सैनिकों को धन, रसद तथा हथियार देने की बात कही। उसने बहादुर शाह जफर के अति करीबी लोगों के बल्लभगढ़ में होने की बात कही। उसने इस बारे में भी कहा कि राजा नाहर सिंह ने उसके पत्रों का कोई जवाब नहीं दिया। चौथी देसी पैदल सेना के कैप्टन हुड ने राजा नाहर सिंह की सैनिक क्षमता, उसकी तोपों, हथियार बनाने वाले स्थलों तथा सैनिकों की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। तीसरे गवाह मैटकाफ ने बल्लभगढ़ क्षेत्र से प्राप्त दस्तावेजों के बारे में बताया कि राजा नाहर सिंह के पत्रों में सरकार विरोधी गतिविधियों तथा सैनिकों को उकसाने की बात कही। चौथे गवाह के रूप में राजा नाहर सिंह का वेतन अधिकारी मोहम्मद बख्श पेश हुआ उसने 23 पेपर (पत्र) राजा द्वारा फारसी व हिंदुस्तानी भाषा में लिखने की बात स्वीकारी, उसने पत्रों पर लगी मोहरों व लिखाई को भी पहचाना। इसी तरह न्यायालय में राजा नाहर सिंह के व्यक्तिगत लेखक शुगनचंद, दिल्ली के लै. गवर्नर के एजेंट मुंशी जीवनलाल, मुगल बादशाह के वैद्य हसन उल्ला रंजन तथा नरेश चंद्र व ज्वाला नाथ इत्यादि ने अपनी गवाही दी। इनके अतिरिक्त लगभग 20 अन्य व्यक्ति भी अपने विचार देने के लिए न्यायालय में उपस्थित हुए तथा सभी ने विभिन्न पक्षों से अपनी बात कही। कार्यवाही के दौरान राजा नाहर ने विभिन्न मुद्दों पर जिरह की तथा उसके वकील ने अन्य पक्षों के साथ–साथ इस बात को भी रखा कि कैप्टन हड़सन ने राजा नाहर सिंह को मृत्यु दंड न देने की बात कहकर समर्पण करने के लिए कहा था।

न्यायालय ने विभिन्न पक्षों को सुनने के बाद 2 जनवरी, 1858 को अपना फैसला दे दिया जिसमें नाहर सिंह को उन पर लगे सभी आरोपों का दोषी माना गया तथा उन्हें मृत्यु दंड सुना दिया।

2 जनवरी 1858 कोर्ट की कार्यवाही इस प्रकार रही– सरकारी वकील ने राजा नाहर सिंह द्वारा अपने बचाव में जो गवाहियां व पत्र पेश किए उनको सारहीन बताते हुए कहा कि जो गवाह राजा नाहर सिंह ने पेश किए हैं, उनसे और उनके द्वारा सचिव गवर्नर जनरल, कमांडिंग–इन–चीफ व लैफ्टीनेंट गवर्नर आगरा को लिखे गए पत्र एक बनावट के आधार पर लिखे गए हैं ताकि अगर ब्रिटिश सरकार विद्रोह को दबाने में सफल हो जाए तो वह अपना बचाव कर सके। मौखिक

गवाहियां देने वालों के बयानों से भी यही साबित होता है कि राजा नाहर सिंह ने उनकी सहायता व्यक्तिगत संबंध होने के कारण की है और राजा सरकार द्वारा लगाए गए आरोपों से मुक्त हो जाए, ऐसा कोई सबूत नहीं दे सके। राजा नाहर सिंह ने विद्रोहियों को सहायता देने और ब्रिटिशन इलाके पर अवैध कब्जा करके ब्रिटिश वफादारी तोड़ दी इसलिए वह इन आरोपों के लिए दोषी हैं।

फैसला कोर्ट

गवाहों द्वारा दिए गए सबूतों से राजा नाहर सिंह पर लगाए गए आरोप सिद्ध होते हैं और कोर्ट इन आरोपों के लिए नाहर सिंह को दोषी मानती है।

कोर्ट इन दोषों के लिए राजा नाहर सिंह को फांसी की सजा देती है कि उसके गले में रस्सी डालकर उसको तब तक लटकाए रखा जाए जब तक कि वह मर नहीं जाता व उसकी सभी प्रकार की संपत्ति जब्त कर ली जाए।

II

राजा नाहर सिंह को दिल्ली के चांदनी चौक में 9 जनवरी, 1858 को (उसी दिन उनका जन्मदिन भी था) फांसी दे दी गई। कोर्ट के रिकॉर्ड में इस बारे में जानकारी इस तरह दी गई है।

9 जनवरी 1858 के दिन, चांदनी चौक कोतवाली के सामने दो लंबी लकड़ी की बल्लियां गड़ी हुई थीं। जिनके ऊपर एक लकड़ी की बल्ली बंधी हुई थी। उसके बीच में एक लंबी रस्सी का फंदा लटक रहा था। फंदे से 7–8 फुट नीचे एक तख्ता था जिसके साथ एक तरफ लोहे का हैंडल लगा था, जिसके खींचने से तख्ता जमीन पर गिर जाए। चौक के चारों तरफ ब्रिटिश सैनिक भारी संख्या में तैनात थे। चारों तरफ के रास्ते बंद कर रखे थे। घुड़सवार सैनिक भी नंगी तलवारें लिए घूम रहे थे। इस समय वातावरण शून्य सा मालूम होता था। किसी के बोलने की आवाज तक नहीं सुनाई देती थी। अंग्रेज सैनिकों से बहुत दूर पीछे मकानों की छतों पर भारतीय घूर–घूर कर यह घटना देख रहे थे, लेकिन किसी की जुबान से कुछ कहने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

ठीक 8 बजे लाल किले का मुख्य द्वार खुलते ही कुछ अंग्रेज सैनिक व उच्च अधिकारी लाल किले के अंदर दाखिल हुए। किले की घुड़साल जहां मुगल सम्राटों के घोड़े बांधते थे, वहां पर राजा नाहर सिंह कोठरी में बंद थे। अंग्रेज अधिकारियों के वहां पहुंचने पर राजा नाहर सिंह को कोठरी से बाहर लाया गया। लाल किले का मुख्य द्वार जैसे ही खुला, दो घुड़सवार अंग्रेज सारजेंट आगे–आगे चल रहे थे और उसके पीछे राजा नाहर सिंह जिसके सिर पर काला टोप पहना रखा था और उसके दोनों हाथ पीछे बंधे हुए थे। एक सारजेंट हथकड़ी पकड़े हुए था और राजा नाहर सिंह की दोनों बाहें दो अंग्रेज सारजेंटों ने पकड़ रखी थी। वे आहिस्ता–आहिस्ता कोतवाली चौंक की तरफ बढ़ रहे थे। कुछ देर बाद वे फांसी पर चढ़ने वाले राजा नाहर को लेकर चांदनी चौक बाजार के कोतवाली चौक पर पहुंच कए और उन्हें फांसी के तख्ते पर खड़ा करके गले से टोप निकाल दिया गया और रस्सी का फंदा गले में डालने के बाद एक अंग्रेज उच्च अधिकार ने राजा नाहर सिंह के सामने खड़ा होकर कुछ पढ़कर सुनाया और उसके रूमाल से इशारा करते ही जल्लाद ने हैंडल खींचा। तख्ता धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा और राजा नाहर सिंह शरीर नीचे लटक गया और इसके बाद जल्लाद ने उसके पांव कई बार खींचे ताकि जिंदा न रह जाए। थोड़ी देर बाद शव को उतार कर एक घोड़ी गाड़ी में रख कर दाह संस्कार के लिए किसी अंजान जगह ले जाया गया।

राजा नाहर सिंह को फांसी के बाद उनकी सारी संपत्ति जब्त कर ली। परिवार के खर्चे के लिए अलग–अलग सदस्यों के लिए 2289 रुपए, 650 रुपए तथा 383 रुपए वार्षिक पैंशन रखकर बल्लभगढ़ से सिपाही भेज दिया। उसके भाई को भी 2200 बीघे जमीन गांव सिही में दी गई तथा बल्लभगढ़ रियासत के 28 गांवों के साथ आसपास के अन्य गांवों को मिलाकर स्कीनर को दे दी। इस तरह बल्लभगढ़ इसके बाद स्कीनर स्टेट का मुख्यालय बन गया।

राजा नाहर सिंह के महलों से अंग्रेजों को काफी मात्रा में धन मिला। रानियों के आभूषण व शाही वस्त्र इत्यादि भी लूट लिए गए। सेना के घोड़े, बैल, रथ तथा ऊंटों को हड़सन ने अपनी सेना में मिला लिया। बल्लभगढ़ के नवाब को फांसी दिए जाने के बारे में ही एक अन्य स्रोत नवंबर, 1928 में प्रकाशित चांद पत्रिका है जिसका फांसी अंक विशेष रूप से प्रकाश डालता है, उससे अंग्रेजों की कार्यप्रणाली स्पष्ट होती है। पत्रिका के अनुसार न्यायालय कानूनी प्रक्रिया का एक ढोंग करता था तथा उसके बाद पहले से निर्धारित फैसला को सुना दिया जाता। मृत्यु दंड देने में यह प्रक्रिया प्रयोग में लाई जाती।

जब बल्लभगढ़ के रइस को फांसी दी गई तो शहर के सभी दरवाजे बंद कर दिए गए। सुबह के वक्त फौज बाजा बजाती हुई फांसी घर के सामने आकर ठहरी फिर किले से फांसी पाने वाले मुजरिम को एक करांची (बैलगाड़ी) में लाया गया जिसके इर्द–गिर्द कटहरा न था, नाहर सिंह के हाथ पीठ की तरफ बंधे थे। कोतवाली में चारों तरफ अंग्रेज तमाशाई जमा थे। जब फांसी का तख्ता खींचा गया तो तमाशाई हंसे। इसके बाद लाश औंधे मुंह करांची में डाल दी गई और शहर के बाहर किसी अनजान जगह दफन करने को भेज दी गई। सर जॉन लारेंस ने अपनी जीवनी में लिखा है कि जब इस तरह की फांसियां दी जाती थी तो उस स्थान पर एक देसी दुकानदार कुर्सियां बिछाता था और उन पर अंग्रेज अफसर आकर बैठते थे, वे दुकानदार को कुर्सियों का किराया देते थे, वहां वे लोग फांसी का तमाशा देखते थे, चुरूट पीते और मरने के आखिरी दृश्य की सैर करते थे। अगर कोई मेम उधर से गुजरती और वह फांसी का नजारा न देख सकती तो टोपी से अपनी आंखों पर आड़ कर लेती थी।

जाट सभा चंडीगढ द्वारा बसंत पंचमी समारोह आयोजित

जाट सभा चंडीगढ द्वारा आयोजित दीन बंधु सर छोटूराम की 135वीं जयंती समारोह के दौरान समारोह के मुख्य अतिथि, हरियाणा के स्वास्थ्य एवं खेल मंत्री श्री अनिल विज ने कहा कि सर छोटू राम जैसी महा विभूतियां कभी-कभी आती हैं जो समाज को एक नई दिशा व सोच प्रदान करती है। सर छोटू राम ने समाज को कृषि का महत्व तथा किसान को उसकी दिक्कतों से अवगत करवाया। उन्होने कहा कि इंसान की मूलभूत तीन वस्तुएं हैं - कुली (मकान), गुली (रोटी) और जूली (बिस्तर) तीनों का उत्पादक किसान है फिर भी इसकी अनदेखी क्यों हो रही है। कृतज्ञ राष्ट्र उनका सदैव ऋणी रहे÷ा।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सांसद श्री रतनलाल कटारिया ने कहा कि सर छोटू राम किसी जाति विशेष के नेता ना होकर एक समाज सुधारक थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे जो खुद ही मुव्वकिल और किसान थे। उन्होने किसान-मजदूर के मर्म को पहचाना और इस वर्ग के कल्याण हेतू जीवनभर संघर्षरत रहे। समारोह के विशिष्ठ अतिथि एवं सांसद श्री दुष्यंत चौटाला ने कहा कि दीन बंधु के सुझाए रास्ते पर चलने से ही ग्रामीण क्षेत्रों का विकास हो सकता है।

जाट सभा के प्रधान डा0 महेंद्र सिंह मलिक ने कहा कि कृषि की मूलभूत जरूरत पानी है। इस दिशा में दीन बंधु सर छोटूराम ने भाखड़ा डैम की रूप रेखा तैयार की और इसमें आ रही बाधाओं को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। किसान-मजदूर की दुर्दशा को सुधारने के लिए उन्होने कई बिल पारित करवाये। उनका मानना था कि जब अन्नदाता खुद भुखा रहेगा तो वह समाज की जरूरत पूरी कैसे करेगा। दीन बंधु के लिए जाति-पाति का कोई स्थान नहीं था बल्कि किसान मजदूर हर जाति धर्म का उनका प्रशंसक है। जाट सभा के प्रधान एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महा निदेशक डा0 एम0एस0 मलिक, आईपीएस (सेवा निवृत) ने कहा कि भगवान को हम तीन रूप में देखते हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश जो पैदा करने वाले, पालक तथा सहांरक की भूमिका निभाते हैं। किसान अन्न पैदा करने तथा सभी का पेट भरने की भूमिका निभाते हुए भी भूखे पेट सोने को मजबूर हैं। सर छोटू राम किसान के इस मर्म से वाकिफ थे और उन्होने सदा किसान की बैबूदगी हेतू कार्य किया। किसान के खेत हेतू पानी, बच्चे हेतू शिक्षा तथा ऋण मुक्ति के लिए सहकारी खेती जैसी प्रथा के लिए प्रयासरत रहे। उनकी तपस्या रंग लाई - लूट खसूट की प्रक्रिया का समापन हुआ। तकावी ऋणों से छुटकारे हेतू खेत के लिए पानी की व्यवस्था, बार-बार आते अकाल से निपटने हेतू पानी का भरोसेमंद स्त्रोत भाखड़ा डैम तथा उसकी पैरवी हेतू अनेकों कानून बनवाए। वे दुश्मन से भी प्यार से काम निकलवाने में निपुण थे। ऐसे किसान, मजदूर, मजलूम मसीहा की आज नितांत आवश्यकता है।

अपने ओजस्वी भाषण में डा0 मलिक ने प्रदेश सरकार द्वारा शुरू की गई महत्वपूर्ण मुहिम 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला के समस्त सदस्यों की ओर से भरपूर स्वागत व समर्थन करते हुए कहा कि सरकार के इस सराहनीय प्रयास से आज की ज्वलंत समस्या - भ्रूण हत्या की रोकथाम व लगातार कम हो रहे कन्या अनुपात को बढ़ाने में जागरूकता उत्पन्न होगी। सर छोटू राम ने वर्ष 1940 में ही स्त्री शिक्षा व कन्या बचाओ की वजाफत की थी जो कि आज प्रशासन के समक्ष एक चुनौती है। जाट सभा आरंभ से ही स्त्री शिक्षा, कन्या भ्रूण हत्या व नारी सशक्तिकरण आदि मुद्दों को कार्यक्रमों व विचार गोष्ठियों के माध्यम से उजागर करती रही है। उन्होने जाट सभा की तर्ज पर राष्ट्र की सभी जाट संस्थाओं व समाज सेवी संस्थाओं से भ्रूण हत्या को रोकने व स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हरियाणा सरकार द्वारा इस संदर्भ में शुरू किए गए महत्वपूर्ण अभियान को आगे बढ़ाने की अपील की। इस अवसर पर समाज के ज्वलंत विषय - समाज में पनप रही नशावृत्ति, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, आनर किलिंग आदि सामाजिक बुराईयों के साथ-साथ देश की सुरक्षा अखंडता व आन बान के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों व युद्धवीरों के आश्रितों व परिवारों के लिए सरकारी सेवा में आरक्षण आदि प्रमुख मुद्दों पर भी विशेष तौर से विचार विमर्श किया गया।

जाट सभा ने इस अवसर पर खेलों तथा शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इन क्षेत्रों में उभरते हुए मेधावी छात्रों तथा खिलाड़ियों को सम्मानित किया। सभा द्वारा जाट भवन चंडीगढ तथा हरियाणा के अन्य परीक्षा केंद्रों पर 4 जुलाई 2015 को आयोजित की गई अखिल भारतीय भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं तथा सभा द्वारा 24 नवंबर 2015 को 'इंटरनेट का सदुपयोग व दुरूपयोग' विषय पर आयोजित किए गए पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं को भी प्रमाण पत्र व नकद पुरूषकार देकर सम्मानित किया गया। सभा के महासचिव द्वारा वर्ष 2015 के दौरान जाट सभा द्वारा किए गए विभिन्न सामाजिक व कल्याणकारी कार्यक्रमों के साथ-साथ सभा द्वारा सैक्टर 6 पंचकुला में निर्माणाधीन सर छोटू राम भवन की प्रगति रिपार्ट भी पेश की गई।

समारोह के दौरान जाट सभा के वर्ष 2015 में सरकारी व अर्धसरकारी सेवाओं से सेवा निवृत होने वाले आजीवन सदस्यों को भी सम्मानित किया गया। सभा द्वारा चलाई जा रही समस्त सामाजिक व अन्य कल्याणकारी गतिविधियों की पूर्ण जानकारी सहित दीन बंधु सर छोटू राम की जीवन गाथा व सिद्धांतों पर आधारित स्मारिका व सभा की गतिविधियों/कार्यक्रमों के वार्षिक कलैंडर का विमोचन भी मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। समारोह के दौरान चंडीगढ/पंचकुला में कार्यरत विभिन्न सामाजिक संस्थाओं व सामुदायिक भवनों के अध्यक्षों को भी मुख्य अतिथि द्वारा स्मृति चिन्ह व शाल भेंट कर सम्मानित किया गया।

समारोह के दौरान बहादुरगढ़ से राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनुभवी पेशेवर कलाकार - राजबाला एण्ड पार्टी द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले विभिन्न रागनी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुख्य आकर्षण रहे। इस अवसर पर पंचकुला के विधायक श्री ज्ञानचंद गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त किए ।

List of New Life Members of Jat Sabha Chandigarh/ Panchkula

Sh. Satya Narain Kundu	Flat N. B-14, Sector 14, Pkl	11000.00
Sh. Jasbir Singh Mann	# 324, Sector 20, Chandigarh	11000.00
Sh. Pritam Sheokand	# 788, Sector 27, Panchkula	11000.00
Mrs. Sonika Rani Malik w/o Sh. Satbir Singh Malik	Shiv Nagar Kila Colony, Kalka	11000.00
Sh. Major Singh	# 405, Sector 26, Panchkula	11000.00
Sh. Jagbir Kadian	# 1653-B, Sector 26, Panchkula.	11000.00
Sh. Anil Mann	# 780, Sector 12, Panipat	11000.00
Mrs. Indira Devi w/o Sh. Ramesh Dahiya	# 1652, Sector 25, Panchkula	11000.00

List of Donations for Construction of Building

M/s Raheja Developers Ltd.		100000.00
M/s Ambience Private Ltd.		49980.00
Dr. M. S. Malik, IPS (Rtd.)	# 222, Sector 36-A, Chandigarh	21000.00
Sh. Jai Pal Punia, HFS (Rtd.)	# 507, Sector 21, Panchkula	11000.00
Sh. Randhir Singh	# 1068, Sector 21, Panchkula	11000.00
Sh. Dharmpal Mehran	# 801, Sector 8, Panchkula	5100.00
Sh. Prem Singh Malik, IFS (RTd.)	# 464, Sector 2, Panchkula.	5100.00
Sh. Wazir Singh Sandhu	# 1459, Sector 23, Chandigarh.	5100.00
Dr. Sarita Malik, HCS	# 222, Sector 36-A, Chandigarh.	5100.00
Col. Nirbhai Singh	# 661, Sector 21, Panchkula	5000.00
Sh. Angrej Singh, J.E.	# 2, Type-IV. Water Supply Colony Sector 39, Chandigarh.	5000.00
Norang Jat Samaj	Baknaur	3100.00
Subedar Partap Singh,	Panipat	3100.00
Sh. Harnam Singh, DSP (Rtd.)	VPO: Jassia, Distt. Rohtak.	2100.00
Sh. Ishwar Khasa	# 884, Sector 4, Haripur Panchkula	2100.00
Sh. Rajendar Singh, DSP (Rtd.)	Gohana, Distt. Sonepat.	2100.00
Sh. Rajbir Singh Sihag	Harco Bank Chandigarh	2100.00
Sh. M. P. Dodwal	# 952, Sector 10, Panchkula	1100.00
Sh. Chander Bhan Pannu	# 1973, Sector 15, Panchkula	1100.00
Sh. Ram Phal Phalswal	# 440, Sector 9, Panchkula	1100.00
Mrs. Kitab Kaur Malik	# 969, Sector 26, Panchkula	1100.00
Sh. Jagbir Singh s/o Sh. Maha Singh	VPO: Nirjan, Distt. Jind.	1100.00
Sh. Wazir Singh	# 1591, Sector 25, Panchkula	1100.00
Sh. Krishan Dahiya	# 176-A, Sector 27, Panchkula	1100.00
Sh. Mahavir Chhikara	# 204, GH-107, 16, Sec-20, PKL	1100.00
Sh. Balbir Singh	VPO: Gandhra, Distt. Rohtak	1100.00
Sh. Fateh Singh Kataria	HMT. Pinjore	1100.00
Sh. D.P.S. Malik	# 628, Sector 26, Panchkula	1100.00
Sh. Dharamvir Dahiya	HMT, Pinjore	1100.00
Sh. O. P. Dhankhar	# 1890, Sector 26, Panchkula	1100.00
Sh. Yogesh Lohchab	G-62, GH-94, Sector 20, Panchckula	1100.00
Sh. Richhpal Punia	VPO: Bichpari, Distt. Sonepat	1100.00
Sh. Mahabir Singh	# 516, Sector 12-A, Panchkula	1100.00
Sh. Ram Phal Nain, SDE (HUDA)	# 671, Sector 21, Panchkula	1100.00
Sh. M. S. Faugat, Manager	HSIIDC, Sector 14, Panchkula	1100.00
Sh. Puran Singh s/o Sh. Bharat Singh	VPO: Bichpari, Distt. Sonepat	1100.00
Sh. Satpal Malik	# 59, Gobind Vihar Baltana (Pb.)	1100.00
Sh. Dharmpal Dhankar, DIG (Rtd.)	# 24, Tribune Society, Raipur Khurd, Chd.	1100.00
Sh. Zile Singh Sangwan	# 142, Sector 14, Panchkula	1100.00
Sh. Ramesh Kundu	# 254, Sector 27, Panchkula	1100.00
Sh. Mewa Singh Dhull	VPO: Harsola, Distt. Kaithal	1100.00
Sh. Naresh Kumar Dahiya	# 90/3, MDC, Sector 4, Panchkula	1100.00
Sh. Anand Singh	# 1378, Sector 21, Panchkula	1100.00
Dr. (Mrs.) Rajwanti Mann	# 764-A, Sector 7, Chandigarh	1100.00
Sh. Anand Singh Rathi	VPO: Julana, Distt. Jind	1100.00
Sh. Mahendar Singh, President	HMT Pinjore	1100.00
Sh. Ved Pal Punia	# 981, Sector 3, Kurukshetra	1100.00
Major M. S. Malik	# 521-F, GH-2, Sector 5, MDC, PKL	1100.00
Sh. V.B. Deswal	# 623, Sector 7, Panchkula	1100.00
Mrs. Savitri Deswal	# 623, Sector 7, Panchkula	1100.00
Sh. Piyush Gill	# 790/21, Kailash Colony	1100.00
Sh. Rajbir Singh Hooda	# 1145, Sector 20, Chandigarh	1100.00
Dr. V. P. Ahlawat		1100.00

वैवाहिक विज्ञापन

- *SN4 Jat Girl (DOB 07th Feb.1990) 25/5'10" B.Tech. (ECE), M.Tech. (ECE) from M.D.U. Rohtak. GATE Qualified. Running own Coaching Centre for graduate level students. Father Public Prosecutor Government of Haryana. Avoid Gotras: Kadian, Rathi, Sangwan. Contract: 08447796371*
- *SM for Jat Girl (DOB14.09.91) 24.4/5'5" M.Sc Physics from P.U. Chandigarh, Doing B.Ed. Avoid Gotras: Sehrawat, Malik, Kadian. Contract: 09815805575*
- *SM for Jat Girl (DOB 30.08.91) 24.5/5'3" M.Sc Chemistry from M.D.U. Rohtak, Doing B.Ed from K.U. Avoid Gotras: Sehrawat, Malik, Sangwan. Contract: 09466538100*
- *SM for Jat Boy (DOB 14.11.86) 29.3/5'10" M.S.c Physics from K.U. Doing Research in Bhugol Vigyan from Nainital. Avoid Gotras: Sehrawat, Sangwan, Malik. Contract: 09466538100*
- *SM for Jat Boy (DOB 21.04.90) 25.6/5'8" B. Tech. Working as Assistant in Haryana Civil Secretariat in Excise & Taxation Deptt. Only son, Father and mother Gazetted Officers in Haryana government. Avoid Gotras: Mor, Siwach, Singroha. Contract: 09988701460, 09855126285*
- *SM for Jat Boy 26.9/5'7" M.C.A. Employed as Project Engineer in ORACLE Co. at Banglore with Rs. 7 Lac package PA. Avoid Gotras: Grewal, Antil, Dalal. Contract: 09417629666*
- *SM for convent educated Jat Boy 31/5'9" Post graduate from P.U. Protocol Officer in NABARD (Govt. of India Bank) Father retired Executive from PSU Bank and sister MBBS, MD doctor. Settled around Chandigarh. Avoid Gotras: Kundu, Gahlaut, Lohan*

कैसे होंगे प्रभु प्रसन्न

– नरेन्द्र आहूजा

आजकल मनुष्य अपने प्रत्येक धार्मिक दिखाई देने वाले आडंबर के पीछे प्रभु को प्रसन्न करने का कारण बताता है। प्रभु को प्रसन्न करने के लिए भूखे रहकर व्रत रखना, किन्हीं प्रचलित धर्मस्थलों की तीर्थ यात्रा, तथाकथित धार्मिक अनुष्ठान करना, दिवस एवं समय विशेष पर किसी नदी विशेष में स्नान करना, नाम जाप करना, स्वयं को ईश्वर या फिर ईश्वरीय अनुकम्पा प्राप्त प्रतिनिधि घोषित कर चुके कथावाचकों गुरूओं के डेरों पर उनकी सेवा करना परंतु प्रश्न पैदा होता है कि क्या प्रभु इन पाखंडों से प्रसन्न होते हैं। यदि नहीं तो फिर प्रभु को प्रसन्न करने का क्या साधन है और प्रभु को प्रसन्न करने का क्या लाभ है?

प्रभु कैसे प्रसन्न होंगे इसका साधन खोजने से पूर्व हमें प्रभु की प्रसन्नता का पैमाना जानना होगा। मनुष्य को भौतिक प्रगति से हम इस बात का आकलन करते हैं। यदि किसी के पास धन दौलत कोठी गाड़ियां भौतिक सुख संपदा है तो हम इस बात को मानते हैं कि ईश्वर की उस पर बड़ी कृपा है और शायद इन्हीं भौतिक सुखों की प्राप्ति की इच्छा से ही हम यह धार्मिक आडंबर पाखंड अंध विश्वास प्रभु को प्रसन्न करने के उपाय के रूप में करते हैं। भौतिक प्रगति की तीव्र लालसा, अंधानुकरण इन अंधविश्वासों पाखंडों आडंबरों के शार्टकट मारने को विवश कर देती है। हालांकि यह शार्टकट मनुष्य के जीवन या जीवन में सफलता को अंत में कटशार्ट ही करते हैं।

यदि हम जीवन में सफलता को ही प्रभु की प्रसन्नता का पर्याय मानें तो इसका साधन जानने के लिए कर्म फल सिद्धांत को जानना मानना पड़ेगा। हमें हमारी नियति प्रारब्ध या किस्मत न्यायकारी परमपिता परमेश्वर सर्वव्यापी दृष्टा के रूप में हमारे सभी कर्मों का ब्यौरा साक्षी के रूप में रखते हुए अपनी न्याय व्यवस्था के आधीन दंड वा पुरस्कार देते हुए नियति या प्रारब्ध के रूप में देते हैं। अर्थात प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपना भाग्य विधाता है और अपने कर्मों की लेखनी से ही अपनी नियति लिखता है। मनुष्य स्वतंत्रकर्ता के रूप में कर्म करने के लिए स्वतंत्र है परंतु कर्ता होने के कारण अपने द्वारा किए गए प्रत्येक कर्म का फल भुगतने के लिए परतंत्र है। मनुष्य को ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अधीन अपने प्रत्येक शुभ अशुभ कर्म का फल अवश्य भुगतना पड़ता है। यदि हम सद्कर्म करेंगे निष्काम भाव से परोपकार के यज्ञीय कार्य करेंगे तो निश्चित रूप से न्यायकारी ईश्वर की न्याय व्यवस्था के आधीन उन सद्कर्मों के फलस्वरूप अच्छी नियति किस्मत के भागी बनेंगे या दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि यदि हम जीवन में स्थायी सफलता पाना चाहते हैं तो हमें सद्कर्म करने होंगे। अर्थात प्रभु की प्रसन्नता का एक मात्र साधन मनुष्य के स्वयं के सद्कर्म हैं।

इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर न तो हमारे द्वारा अपनी स्तुति का भूखा है और न ही धार्मिक आडंबरों पाखंडों अंधविश्वासों से प्रसन्न होता है। ईश्वर की स्तुति अर्थात ईश्वर के सच्चे स्वरूप गुणों का गान हम अपने लाभ के लिए अर्थात उन गुणों को अपने जीवन में धारण करने की इच्छा से करते हैं। यदि हम ईश्वर को न्यायकारी दयालु सबका पालक उत्पत्तिकर्ता आदि बताते हैं तो हम यह भी विचार करें कि क्या हम अपने जीवन में दूसरों के प्रति दयालुता दिखाते हैं क्या हम अपने आचरण से न्याय करते हैं या फिर किसी स्वार्थ के वशीभूत पक्षपात अन्याय करते हैं। हम कितने गरीबों दुःखियों का पालन कर रहे हैं। ईश्वर की सच्ची स्तुति केवल ईश्वरीय सत्य गुणों का गायन नहीं अपितु उन गुणों को अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करना है। यदि हम सच्चे मन से ईश्वर की स्तुति कर उन गुणों को धारण करते हुए जीवन में सद्कर्म परोपकार के यज्ञीय कार्य निष्काम भाव से करेंगे तो हम निश्चित रूप से प्रभु को प्रसन्न कर सकते हैं। केवल पाखंडों अंधविश्वासों आडंबरों से प्रभु कभी प्रसन्न नहीं होते।

हमे जिन पर गर्व है

Virat Punia S/o Sh. Virender Singh Punia student of class 1st, the Sky World School Panchkula, has bagged 6th International Rank in the IMO organised by SOF (Science Olympiad Foundation) world's biggest Olympiad.

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।